चन्दामामा
दीवाली विशेषांक

रामू एक छोटा सा लड़का था जिसकी उम्र अभी दस बरस की भी न हुई थी। पर वह था बड़ा चालाक। बचपन में ही बेचारे का बाप स्वर्ग सिधार गया था। वह उसके लिए एक छोटी सी झोंपड़ी और एक गाय छोड़ गया था। उस गाय से रामू को बड़ा प्रेम था। उसका दूध बेच कर माँ-बेटा अपना गुजारा कर लेते थे।

उस गाय से रामू को इतना प्रेम था कि वह खुद भूखा रह जाता। लेकिन जिस दिन गाय का पेट न भरता तो उसे बड़ा दुःख होता। किन्तु अब दिन बदल गए। जब पेट भरना ही मुश्किल हो गया तो फिर गाय कैसे पाली जाय ? एक दिन शाम को रामू घास की गठरी सिर पर रखे घर लौट रहा था। इतने में उसने देखा कि दो आदमी एक गाय को हाँक कर ले जा रहे हैं। नजदीक आने पर देखा कि वह उसके पड़ोसी सुन्दरलाल जी की गाय है। यह देख कर रामू को बड़ा अचरज हुआ। यह जानने की बड़ी इच्छा हुई कि वे कौन हैं और उस गाय को कहाँ हाँके ले जा रहे हैं। इसलिए वह उनके पीछे लग गया। उन दोनों ने उस गाय को ले जाकर गाँव के जमींदार साहब की गोठ में बाँध दिया।

रामू ने उनके पास जाकर पूछा- "यह गाय तो सुन्दरलाल जी की है न ? इसे यहाँ क्यों ले आए हो?" "यह गाय गाँव में सब के खेत चरती फिरती है। अब क्या किया जाय ?" उन्होंने कहा। "ओह! यह बात है !" कह कर रामू अपने घर चला गया। इसके बाद वह रोज किसी न किसी समय

जमींदार साहब की गोठ के पास आता और देखता कि सुन्दरलाल जी की गाय को चारा- पानी दिया जा रहा है या नहीं। यह सब देख कर उसके मनमें तरह तरह के विचार आने लगते। एक दिन वह रोज की तरह अपनी गाय को चराने के लिए गाँव के बाहर ले गया। वहाँ जाकर वह एक पेड़ की छाँह में बैठ गया और गाय को चरने के लिए छोड़ दिया। बीच में कब उसकी आँख लग गई, मालूम नहीं। लेकिन जब उसकी आँख खुली तो देखा कि गाय का कहीं पता नहीं है। वह तुरन्त दौड़ कर जमींदार साहब की गोठ की तरफ गया। देखा कि उसकी गाय भी सुदरलाल जी की गाय की बगल में बँधी है। यह देख कर रामू को पहले तो बड़ा दुख हुआ।

लेकिन इतने में उसके मन में एक विचार पैदा हुआ। उसने सोचा-"मेरी गाय जमींदार साहब की गोठ में बँधी हुई है। एक तरह से यह भी अच्छा ही हुआ। क्योंकि अब मुझे उसके लिए चारे-पानी की चिन्ता नहीं करनी होगी। मेरी गाय आराम से है। बस, मुझे और क्या चाहिए ?" उसने सोचा। जब थोड़ी देर में वह अपने घर गया तो माँ ने पूछा-"गाय कहाँ रे !" "एक जगह आराम से है। अब हमें उसके बारे में कोई फिक्र न करनी पड़ेगी। अब हम अपना पेट भरें, यही काफी है।" उसने जवाब दिया।" "क्या कहता है तू ? अपनी गाय की फिक्र हम न करेंगे तो और कौन करेगा ? कौन उसे पालेगा ? अगर कोई उसे पाल भी लेगा तो इससे हमें क्या मिलेगा ? जो पालेगा, वही उसका दूध भी दुह लेगा। इससे

हमें क्या फायदा होगा ?" उसकी माँ ने पूछा। "यह सब मैं तुम्हें पीछे बनाऊँगा।" रामू ने कहा। उसकी माँ चुप रह गई। उसी दिन रामू ने जमींदार साहब की गोठ में जाकर वहाँ नौकरों से कहा-"क्या मुझे भी यहाँ कोई काम मिलेगा ?" "जाओ ! जमींदार साहब से पूछो !" उन्होंने कहा। रामू तुरन्त जमींदार साहब के पास गया और नौकरी के लिए बिनती की। "अरे तू तो निरा छोकरा है ! तू क्या काम करेगा ? तुझे क्या वेतन मिलेगा ?" जमींदार ने कहा। "मुझे काम करने दीजिए ! मैं वेतन-ऊतन कुछ नहीं माँगता।" रामू ने कहा। जमींदार साहब ने उसकी बात मान ली।

दूसरे दिन सबेरे रामू कलेवा करके जमींदार साहब की गोठ में काम करने गया। इतने में जमींदार साहब क्रोध से गरजते हुए वहाँ आए। उनके पीछे रोती-धोती रामू की माँ भी आई। रामू को देखते ही जमींदार ने गरज कर कहा-"अरे ! तो, मुझे ही
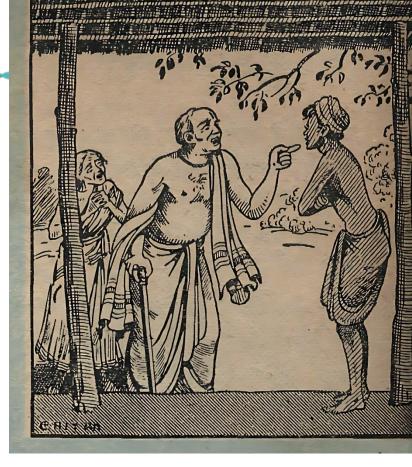
चक्रमा देने चला तू ? एक तो तू दूसरों का खेत चराता है। और दूसरे मुझे धोखा देख कर मेरी ही गोठ में नौकरी करने आता है ?" उन्होंने आँखें तरेर कर कहा।

"इस बार माफ कर दीजिए ! बाबू ! आगे वह ऐसा नहीं करेगा !" रामू की माँ रो-धो कर गिड़गिड़ाने लगी।" "अच्छा ! तो जुर्माना चुका कर गाय को हाँक ले जाओ।" जमींदार ने कहा। "हुजूर! आप मुझे जो दण्ड चाहे दीजिए ! लेकिन जुर्माना न डालिए! हम लोग गरीब हैं।" रामू ने उनसे कहा। "अच्छा! तो इसे छः बेंत लगाओ !"

जमींदार ने अपने नौकरों की तरफ घूम कर कहा। रामू ने अपने हाथ पसारे। एक नौकर ने बेंत लगाना शुरू किया। चार बेंत खा कर रामू बेहोश होकर गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद उसे होश आया तो उसने बाकी बेंत खाने के लिए हाथ पसारे। लेकिन यह देख कर जमींदार का हृदय पिघल गया। उसने कहा- "ठहरो!" वह रामू को अपने साथ घर ले गया। "क्या इस तरह धोखा देना तुम्हें उचित था ?" थोड़ी देर बाद जमींदार ने रामू से पूछा। "हजूर ! मैंने जान-बूझ कर उस गाय को दूसरों के खेत में छोड़ नहीं दिया था। मेरे अभाग्य से ऐसा हो गया। इसका मुझे बहुत दुख है। लेकिन फिर मैंने सोचा कि वह आपकी गोठ में आराम से है। मेरे घर पर तो उसे भर-पेट चारा भी मिलता। यह सोच कर कुछ सन्तोष हुआ। लेकिन गाय को छोड़ कर मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता था। इसलिए मैंने बिना वेतन के भी आप के यहाँ नौकरी करने की ठान ली। अब आप कहते हैं कि जुर्माना देकर गाय ले जाओ ! हमारे लिए तो पेट भरना ही मुश्किल हो गया है। हम गाय को कैसे पालें ?" रामू ने जवाब दिया। "रामू ! तू कितना भोला-भाला है ? क्या तू सोचता है कि हम तेरी गाय को पालते रहेंगे ? अच्छा जा ! आज से तू मेरे यहाँ नौकरी कर ले। अपनी गाय हमारी गायों के साथ पलने दे। तू ही सब को चरा लाया कर !" जमींदार ने मुसकुरा कर रामू से कहा। उन्हें उस पर दया आ गई थी। उस दिन से रामू जमींदार का नौकर बन गया। अब उसे किसी तरह की तकलीफ न रही।

काठ का घोड़ा
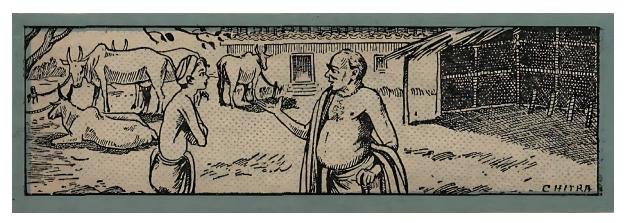
लोग कहते हैं कि किसी समय कहीं एक नवाब था। उसका एक ही लड़का और एक लड़की थी। लड़का बड़ा बहादुर था। किसी से नहीं डरता था। उसका नाम था फिरोजशाह। लड़की बड़ी खूबसरत थी। उसका नाम था जहानारा। वह नवाब हर साल एक बड़ा जलसा करता था। वह जलसा देखने के लिए देश-देश के नामी-गिरामी लोग, शाहजादे, शायर, नट-कथक, और गुणी-गवैये आते रहते थे। नवाब के सामने वे अपना जौहर दिखलाते और ईनाम पाते थे। एक साल एक बूढ़ा आदमी उस जलसे में आया। अनेक शिल्पी अनेक तरह की बोलने, चलने और किस्म-किस्म की करामात दिखलाने वाली प्रतिमाएँ लाए थे। लेकिन वह बूढ़ा सिर्फ एक काठ का घोड़ा ले आया था। उस बूढ़े को और उसके घोड़े को देख कर सभी लोग हँसने लगे। "वह घोड़ा तुम्हीं ने बनाया है दादा !" एक आदमी ने पूछा। "कैसा बढ़िया घोड़ा है ? क्या दाम है इसका ?" दूसरे ने हँसी उड़ाई।

"भई ! क्या समझ रखा है उस घोड़े को तुमने ? वह देवताओं का घोड़ा है !" एक ने कनखी मार कर कहा। "दादा ! वे सब तुम्हारी हँसी उड़ा रहे हैं। लेकिन मैं सच पूछता हूँ। बताओ, इसका दाम क्या हैं ?" एक ने गम्भीर-भाव से पूछा। अब उस बूढ़े शिल्पी को गुस्सा आ गया। उसने कहा-"इस घोड़े को तुम क्या तुम्हारे बाप-दादे भी नहीं खरीद सकते! जाओ ! अपनी राह

लो !" उसने झिड़क दिया। कुछ दिन बाद नवाब ने उन शिल्पियों की बनाई हुई हरेक मूर्ति को देखा और उन्हें उचित पुरस्कार देकर कुछ को खरीद लिया। आखिर बूढ़ा और उसका काठ का घोड़ा बच गए। "इस घोड़े में क्या करामात है ?" नवाब ने से पूछा। "हुजूर ! गौर से सुनिए ! यह ऐसा-वैसा घोड़ा नहीं है। पलक मारते यह आसमान में उड़ जाता और तारों से बातें करने लगता है।" उस बूढ़े ने नवाब से कहा। "वाह ! वाह ! भई ! आकाश-पाताल के कुलाचे मत मिलाओ; ऐसा घोड़ा तो सारी दुनिया में कहीं नहीं पाया जाता है !" नवाब ने अचरज के साथ कहा। "हुजूर ! जरा सब्र करें तो अभी अभी इसकी करामात देख लेंगे।" उस बूढ़े ने कहा। "अच्छा! चलो ! मैं अभी इसकी जाँच करता हूँ। तुम इस घोड़े के बारे में जो कुछ कहते हो वह सच है, तो जाओ ! इस पर चढ़ कर मेरा एक काम कर लाओ। यहाँ से दस कोस दूर पर काला पहाड़ है। उस पर एक मसजिद है। उस मसजिद की बगल में खजूर का पेड़ है। जाओ, उस खजूर की एक पत्ती तोड़ लाओ जिससे मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास हो सके !" नवाब ने हुकुम दिया। बन्दगी करके बूढ़ा घोड़े पर चढ़ गया और उसके सिर पर की कलङ्गी उतार दी। घोड़ा उड़ा और मेघों में मिल कर ओझल हो गया। घोड़ा कैसे, कब वहाँ से उड़ा, कहाँ गया और कब आया, यह किसी को मालूम नहीं हुआ। लेकिन दूसरे ही क्षण वह बूढ़ा नवाब के सामने आकर फिर खड़ा हो गया। उसके हाथ में नवाब की माँगी हुई पत्ती थी। यह देख कर नवाब दङ्ग रह गया। उसको अपनी आँखों पर आप ही विश्वास न हुआ। उसने सोचा- "किसी न किसी तरह यह घोड़ा

बूढ़े से ले लेना चाहिए।" यह सोच कर उसने बूढ़े से कहा-"तुम यह घोड़ा मुझे दे दो और उसके बदले में जो चाहो माँग लो।" "अच्छा ! तो इस घोड़े के बदले आप अपनी लड़की से मेरा ब्याह कर दीजिए।" उस बूढ़े कारीगर ने निधड़क कहा। यह सुन कर सब लोग भौंचक्के रह गए। क्योंकि वह कारीगर बहुत ही बूढ़ा था। तिस पर ऐसा बदसूरत था कि जो उसका चेहरा एक बार देख लेता, फिर कभी भूल न जाता। ऐसे आदमी से देखते देखते नवाब साहब की सोलह साल की लड़की को कैसे ब्याहा जाए ? नवाब भी सोच में पड़ गया। तब शाहजादे फिरोजशाह ने कारीगर से कहा-"हमें कैसे विश्वास हो कि इस घोड़े में कुछ माया नहीं है ? कैसे मालूम हो कि वह दूसरों के चढ़ने पर भी उसी तरह उड़ता है कि नहीं ? हमें सच कैसे मालूम हो ? इसलिए मुझे एक बार इस पर चढ़ कर जाँच कर लेने दो !" तब बूढ़े ने भी शाहजादे की बात मान ली। तुरन्त शाहजादे ने उस घोड़े पर चढ़ कर कलङ्गी उतार ली। घोड़ा उठा और पालक झपकते ही आसमान में ग़ायब हो गया। नवाब और दरबारी लोग देखते ही रह गए। वे लोग फिरोजशाह के लौटने की राह देखते हुए वहीं बैठे रहे। धीरे धीरे दोपहर हो गई। लेकिन शाहजादा लौट कर न आया। आखिर शाम भी हो गई। लेकिन उसका कहीं पता न था। आखिर रात भी हो गई।

तब नवाब को बहुत गुस्सा आया। उसने सोचा-"यह कारीगर घोड़ा न ले आता तो मेरा बेटा इस तरह गायब न हो जाता।" इसलिए उसने कहा-"इस बूढ़े को ले जाकर कैदखाने में डाल दो। जब शाहजादा लौट कर आएगा तो देखा जाएगा।" तुरन्त सिपाहियों ने उस बूढ़े कारीगर को ले जाकर कैदखाने में बन्द कर दिया। उधर फिरोजशाह उस काठ के घोड़े पर वायुवेग से उड़ा जा रहा था। पहले तो उसे यह देख कर बड़ा डर लगा। उसने नीचे झाँक कर देखा कि वह कितनी ऊँचाई पर आ गया है। लेकिन नीचे देखने पर उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। यहाँ तक कि उसका वह किला भी नहीं दिखाई दिया। सिर्फ काला पहाड़ साँप की एक बाँबी के समान दिखाई दे रहा था।

उसके सर में चक्कर आ गया। उसने घोड़े को कस कर पकड़ लिया। लेकिन घोड़ा तो उड़ा ही चला जा रहा था। तब फिरोजशाह को अपने घर वालों की याद आने लगी। बाप याद आया जिसने बड़े प्यार से पाला-पोसा था, बहन याद आई जो हमेशा उसके साथ खेला करती थी; अपने यार-दोस्त भी याद आए। क्या अब वह फिर उन्हें नहीं देख सकता ? वह डर से काँपने लगा। उसने आँखें बन्द कर लीं। लेकिन घोड़ा तो ऊँचा ही उठता जा रहा था। घबड़ा कर उसने आँखें खोलीं। लेकिन तब तक वह भूल गया कि घोड़ा कैसे नीचे उतरता है। वह भारी सोच में पड़ गया! घोड़े को टटोल कर देखने लगा कि कहीं कोई कील-काँटी नहीं है

जिसके दबाने से वह नीचे उतरने लगेगा। लेकिन उसे कहीं कुछ न मिला। तब उसने घोड़े के अङ्ग-अङ्ग को हिला-डुला कर देखा। लेकिन कोई फायदा न हुआ। आखिर झुञ्झला कर वह कलङ्गी- जो उसके हाथ में थी -घोड़े के सर में जोर से घुसा दी। बस, कलङ्गी लगते ही घोड़ा नीचे उतरने लगा। तब कहीं उसकी जान आई। उसने कलङ्गी को जरा और दबाया तो घोड़ा और भी वेग से नीचे उतरने लगा। आखिर घोड़ा एक सतमञ्जिले महल के ऊपर उतरा। तब तक रात हो गई थी। सारे शहर में सन्नाटा छाया हुआ था। फिरोजशाह सीढ़ियों से उतर कर महल के अन्दर पहुँचा। कहीं से गाने-बजाने की आवाज आ रही थी। वह उस आवाज की ओर चला और एक बड़े कमरे में जा पहुँचा। वह कमरा हीरे-जवाहरों से जड़ा हुआ था और रोशनी में चमचम कर रहा था। उसने अन्दर जाकर देखा कि एक फूल से मुलायम रेशमी गद्दे पर एक सुन्दरी लेटी हुई है। उसके चारों ओर उसकी सहेलियाँ सो रही हैं। फिरोजशाह को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। उसे ऐसा लगा जैसे वह कोई सपना देख रहा हो। उसने अपने बदन में चिकोटी काट कर देखा। जब दरद हुआ तो समझा कि सब कुछ सच है। उसने फिर उस सुन्दरी की ओर देखा। वह सितारों के बीच चाँद की तरह मालूम पड़ती थी। उसके सुगंधित बाल लहरा रहे थे। फिरोज ने जाकर धीरे से उसके बाल अपने हाथ में ले लिए। सुंदरी ने चौंक कर आँखें खोल दीं। फिरोजशाह ने धीरे से उसको अपनी सारी कहानी कह सुनाई। उसने उससे बिनती की कि वह उसके मुल्क में आकर उससे ब्याह कर ले। वह सुन्दरी भी उस पर रीझ गई थी। इसलिए वह भी चुपके से उठी और उसके साथ हो गई। दोनों उस घोड़े पर सवार होकर फिरोजशाह मुल्क में जा उतरे। फिरोजशाह नहीं चाहता था कि शहर के सब लोगों को शाहजादी

की बात मालूम हो। इसलिए उसने शाहजादी को नगर के बाहर एक बाग में उतार दिया और खुद अपने महल में आ गया। लड़के को देख कर नवाब की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने तुरन्त हुक्म दिया कि कारीगर कैदखाने से छोड दिया जाए। उसने तुरन्त शाहजादे के ब्याह की तैयारियाँ भी शुरू कर दीं। यह सारा हाल उस बूढ़े कारीगर को भी मालूम हुआ। वह तुरन्त शहर के बाहर वाले बाग में पहुँचा और सुन्दरी से बोला-"शाहजादे ने आपको जादू के घोड़े पर चढ़ा कर महल में ले आने का हुक्म दिया है।" शाहजादी ने भी उसकी बातों पर विश्वास कर लिया। वह उस घोड़े पर उसके पीछे बैठ गई। तुरन्त कारीगर ने कलङ्गी उतारी और घोड़ा हवा से बातें करने लगा। जब शाहजादी के स्वागत के लिए नवाब साहब गाजे-बाजे के साथ बाग में हाजिर हुए तो कारीगर की बात मालूम हो गई। यह खबर सुनते ही फिरोजशाह पागल सा हो गया। शाहजादी के बिना वह जी नहीं सकता था। इसलिए वह घोड़े पर चढ़ कर उसे खोजने निकला। कारीगर का घोड़ा उड़ते-उड़ते यूनान मुल्क के एक मैदान में उतरा। तब शाहजादी कारीगर की चालाकी जान गई और रोने लगी। उसी समय यूनान का राजा उधर से शिकार खेलने जा रहा था। उसने शाहजादी के रोने की आवाज सुनी। तुरन्त दौड़ कर वह उसके पास पहुँचा और उसकी रक्षा की। शाहजादी पर वह रीझ गया। इस नई बला से बचने के लिए वह पागल बन गई। यह देख कर यूनान के राजा को बहुत रञ्ज हुआ। उसने अनेकों हकीमों को बुला कर उसकी दवा कराई। लेकिन कोई फायदा न हुआ। इधर शाहजादा

फिरोजशाह उसकी खोज में देश-विदेश घूम रहा था। लेकिन कहीं उसे शाहजादी का सुराग न मिला। आखिर वह घूमते-घामते यूनान जा पहुँचा। वहाँ उसे शाहजादी के पागलपन का पता चला। झट फिरोजशाह ने हकीम का भेष बनाया और राजा के पास जाकर कहा-"हुजूर ! मैं अनेकों जड़ी-बूटियाँ जानता हूँ। मैं शाहजादी का पागलपन दुरुस्त करूँगा।" राजा उसकी बातें सुन कर बहुत खुश हुआ। वह उसे तुरन्त शाहजादी के पास ले गया। इस निराले हकीम को देखते ही शाहजादी का मिजाज जरा ठण्डा हुआ।

"हुजूर ! एक काठ के घोड़े के कारण इस शाहजादी का मिजाज यों खराब हो गया है। उसी तरह के घोड़े पर चढ़ा कर मन्तर-जन्तर करना होगा। मुझे उस तरह का घोड़ा तैयार करने में दस बरस लग जाएँगे।" फिरोजशाह ने शाहजादी की जाँच करके राजा से कहा। "वैसा घोड़ा तो हमारे पास

है। तैयार करने की क्या जरूरत है ? उस पर चढ़ कर इसका इलाज करो !" राजा ने उससे कहा। फिरोजशाह की चाल काम कर गई। उसने शाहजादी को घोड़े पर चढ़ा कर कुछ झूठ-मूठ के मन्त्र पढ़े। फिर उचक कर वह भी घोड़े पर सवार हो गया और कलङ्गी उतार ली। तुरन्त घोड़ा फुर्र से उठा और आसमान में गायब हो गया। फिरोजशाह शाहजादी के साथ अपने मुल्क में पहुँचा। बड़ी धूम-धाम से उन दोनों का ब्याह हुआ। ब्याह के दिन ही उस काठ के घोड़े को जला दिया गया। वे दोनों सुख से रहने लगे।

एक राजा था। नगेन उसका एक नौकर था। वह बड़ा हँसोड़ था। अपनी बातों से वह रोज राजा को हँसाया करता था। इसलिए राजा उसे बहुत चाहता था। राजा के पास नौकर थे और रानी के पास नौकरानियाँ थीं। नौकरानियों में से एक का नाम था चन्द्रिका। वह भी नगेन की तरह ही रानी का मन बहलाया करती थी। इसलिए रानी भी उसे बहुत चाहती थी। एक दिन राजा और रानी में बहस उठी कि नगेन और चन्द्रिका इन दोनों में कौन ज्यादा होशियार है ? राजा नगेन का पक्ष लेता था और रानी चन्द्रिका का। दोनों में बहुत देर तक वाद-विवाद होता रहा। लेकिन कुछ तय न हो सका। आखिर दोनों ने मन्त्री को बुला मेजा और आने पर उससे पूछा-"मन्त्रिवर ! नगेन और चन्द्रिका में कौन ज्यादा होशियार है ?" "दोनों एक-पर-एक है।" मन्त्री ने खूब सोच-विचार कर जवाब दिया।

कुछ दिन बाद रानी ने मन्त्रीजी को बुला कर कहा-"मन्त्रीजी ! चन्द्रिका बड़ी हो गई है। उस का व्याह कर देना चहिए। उसके लिए योग्य वर ढूँढ लाने की जिम्मेदारी आप पर है।"

कुछ दिन बाद राजा ने भी मन्त्री से कहा-"मन्त्री ! नगेन के लिए एक योग्य लड़की चाहिए।" तब मन्त्री ने राजा से कहा कि "नगेन के योग्य वधू चन्द्रिका ही है।" फिर रानी से जाकर कहा-"चन्द्रिका के योग्य चर नगेन है।" इस तरह दोनों को राजी कर के मन्त्री ने बड़ी धूम-धाम से दोनों का ब्याह करवा दिया। ब्याह तो हो गया। लेकिन कुछ दिनों बाद वे दोनों बड़ी मुश्किल में पड़ गए। गिरस्ती चलाने में रुपया हाथ में आते ही गायब हो जाता था। दोनों ने ब्याह के पहले जो रुपया बचा कर रखा था वह भी चुक गया। आखिर भूखों मरने की नौबत आ

विनोद कुमार
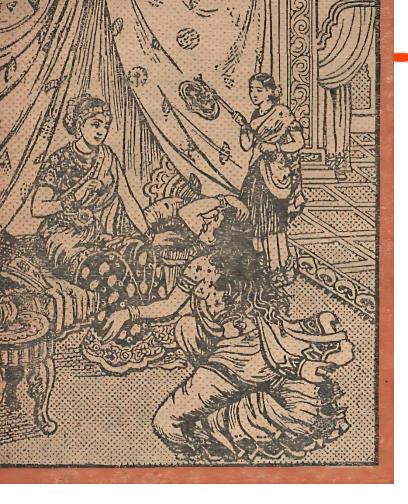
गई। तब दोनों ने दिमाग लड़ा कर एक उपाय सोच निकाला। दूसरे दिन चन्द्रिका उठते ही बाल बिखेर कर, रोती-धोती, छाती पीटती रानी के घर गई और कहने लगी-"रानीजी! क्या कहूँ ? मेरा सुहाग लुट गया ! मैं कितनी खुशी से आप के यहाँ रहती थी ? लेकिन वे दिन तो अब चले गए ! हाय! चार दिन की चाँदनी हो गई ! अब मुझे कौन देखे-भालेगा ?" रानी ने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया और आँखों में आँसू भर कर कहा-"अब रोने से क्या फायदा ? चन्द्रिका ! किसने सोचा था कि तुम्हारा भाग्य ऐसा होगा ? तुम्हारी भलाई के ख्याल से हमने यह ब्याह कराया था। खैर, अब जो होना था सो तो हो गया !"

इस तरह रानी ने उसे ढाढ़स बँधाया और अशर्फियों की एक पोटली देकर उसे घर भेज दिया। ज्यों ही वह अशर्फियाँ लेकर घर पहुँची त्यों ही नगेन ने उसे छाती से लगा किया और बार-बार उसकी चतुरता की तारीफ की। "अब जरा देखना ! मैं क्या करता हूँ ?" यह कह कर वह उठा और रोते रोते राजा के पास गया। राजा उसे देखते ही भौंचक्का रह गया-"अरे नगेन ! माजरा क्या है ? इस तरह रोता क्यों है ?" उसने कहा। "क्या कहूँ ? हुजूर ! मैं तो लुट गया। घर की लक्ष्मी मुझे छोड़ कर चली गई। इतने दिन निश्चिन्त हो कर अकेले जी रहा था। आप के कहने से मैंने व्याह किया। अब देखिए, मैं लुट गया हूँ। जो रुपया बचा रखा था सब दवा-दारू में खर्च हो गया !' नगेन ने सिर पीट कर कहा। यह सुन कर राजा ने भी उसकी बातों पर विश्वास कर लिया और उसे धीरज बँधा कर, एक हजार अशर्फियाँ देकर घर भेज दिया। उसके जाने के बाद राजा ने सोचा कि चन्द्रिका के

अभाव में रानी सोच में पड़ गई होगी। इसलिए उसे तसल्ली देने के लिए रनवास में गया। "बेचारी चन्द्रिका कितनी हँसमुख थी ? हमेशा खुद हँसती रहती थी और दूसरों को भी हँसाती थी !" रानी को देखते ही राजा ने समवेदना प्रगट करना शुरू किया। "हाँ, हाँ, उस अभागे से ब्याह करके मैंने ही उसका सिन्दूर मिटा दिया। मन्त्री के कहने से मैंने जल्दी बाजी की। नहीं तो पहले किसी ज्योतिषी को दिखा कर उसकी आयु जान लेनी थी !" रानी ने जवाब दिया। उसकी बात सुन कर राजा अचरज में डूब गया।

"यह क्या ? मर गई चन्द्रिका ! इसमें नगेन की आयु कैसे कम हो गई ?" उन्होंने पूछा। "वाह ! वाह ! यह आप से किसने कहा कि चन्द्रिका मर गई है। शायद वह मर जाती तभी अच्छा होता। बेवा होकर जीने से तो मर जाना ही अच्छा होता ! बेचारी को मैंने बहुत तसल्ली देकर अशर्फियों की एक थैली भी दे दी !" रानी ने कहा। "यह तो बड़ा गजब है ! अभी तो मैं नगेन को एक हजार
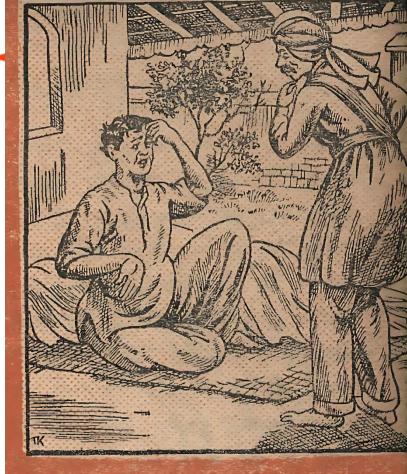
अशर्फियाँ देकर आ रहा हूँ। वह रोते-धोते आया था कि चन्द्रिका के मरने से उसको बहुत दुख हो रहा है ! और तुम कहती हो कि नगेन मर गया है !" राजा ने पूछा। "हाँ ! मैं जानती हूँ कि नगेन ही मर गया है !" रानी ने कहा। "ऐसा कभी नहीं हो सकता। चन्द्रिका मर गई है।" राजा ने कहा। इस तरह दोनों में थोड़ी देर तक बहस होती रही। आखिर राजा ने एक नौकर को यह जानने भेजा कि दोनों में से कौन पहले मर गया है। राजा के नौकर देखते ही नगेन ने चन्द्रिका को लिटा दिया और ऊपर एक चादर ओढ़ा कर बगल

में बैठ कर रोने-धोने लगा। यह देख कर नौकर उलटे पाँव लौट गया और राजा से जाकर कहा कि चन्द्रिका ही मर गई है। उसकी बात सुन कर रानी को बहुत गुस्सा आया। उसे नौकर पर विश्वास न हुआ। इसलिए उसने सत्य जानने के लिए अपनी नौकरानी को भेजा। चन्द्रिका पहले ही जानती थी कि इस बार एक दासी उसे देखने आएगी। इसलिए उसने नगेन को लिटा कर एक चादर ओढ़ा दी और खुद बगल में बैठ कर रोने-धोने लगी। दासी यह देख कर लौट गई और रानी से जाकर कहा कि नगेन ही मर गया है। यह सुनते ही राजा को शक हुआ और वह रानी के साथ खुद ही नगेन के घर की ओर चला। राजा-रानी के आने की बात जान कर चन्द्रिका और नगेन दोनों चादर ओढ़ कर लाशों की तरह पड़े रहे। "अपनी पत्नी के शोक से पागल होकर नगेन भी जहर पीकर मर गया होगा।" राजा ने यह देख कर निश्चय किया। "नहीं, नहीं ! अपने पति के शोक से पतिव्रता चन्द्रिका ही जहर पीकर मर गई होगी।" रानी ने कहा। अब दोनों में फिर बहस होने लगी। "इन दोनों में कौन पहले मर गया है, यह बताने वाले को मैं एक जागीर दूँगा।" आखिर झुञ्झला कर राजा ने कहा। नगेन चट से उठ कर राजा के पैरों पर पिर पड़ा और बोला-"हुजूर ! पहले मैं ही मर गया हूँ।" चन्द्रिका उससे क्या कम थी ? उसने भी झट उठ कर रानी के पैरों पर गिर कर कहा-"देवी ! पहले मैं ही मर गई हूँ !" लेकिन देखने वालों ने पूछा-"तुम दोनों मरने का बहाना क्यों कर रहे थे ?" "उदर निमित्तं बहुकृत वेषम्।" नगेन ने जवाब दिया। "भूखे भजन न होइ गुपाला।" चन्द्रिका ने कहा। यह सुन कर सब लोग हँस पड़े। राजा ने नगेन को एक जागीर दे दी।
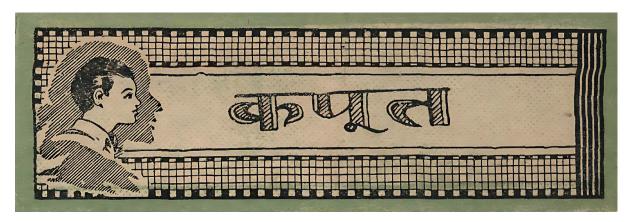
वनगाँव में गौरी नाम की एक गरीब औरत रहती थी। वह खूब मेहनत करती थी। चीथड़े पहने हुए कोई ठठरी आपको कहीं दिखाई दे, तो समझ लीजिए कि वही गौरी है। सचमुच उसको इस तरह मेहनत करते देख कर सब लोगों को अचरज होता। वह तड़के कितने बजे उठती, किसी को मालूम नहीं होता। लेकिन छः-सात घरों में झाड़ने बुहारने का काम कर आती। फिर दूध दुह कर छः-सात घरों में बेच लेती। वह कुछ घरों में जाकर रसोई भी कर देती। वहाँ उसे खाना मिल जाता। दोपहर को धान कूटने जाती और चावल-खुद्दी ले आती। साँझ को गाँव के बाहर जाकर जलावन के लिए सूखी लकड़ियाँ और कण्डे चुन लाती। फिर कहीं से गोबर लाकर उपले पाथती। उसे इस तरह मेहनत करते देख कर लोग आपस में कहने लगते-"गौरी क्यों इतनी मेहनत करती रहती है ? इस तरह उपले बना कर, लकड़ियाँ बेच कर और हरदम दूसरों की गुलामी करके रुपए कमा कर वह क्या करेगी ? बहुत से लोग नहीं जानते कि उसके जयपाल नाम का एक लड़का है और उसी के लिए गौरी इतनी मेहनत करती है।

गौरी की एकमात्र इच्छा थी कि जयपाल बड़ा होकर नाम कमाए और बाप-दादों का नाम रोशन करे। इसलिए वह आधे पेट खाकर, चीथडे पहन कर दिन काटती और हमेशा मेहनत करती रहती। इस तरह गौरी अनेकों कष्ट झेल कर लड़के को पाल-पोस रही थी । लेकिन माँ के लाड़-प्यार से लाभ उठा कर जयपाल ने खूब खर्च करना शुरू कर दिया था। खुद भूखी रह कर भी उसकी माँ उसे
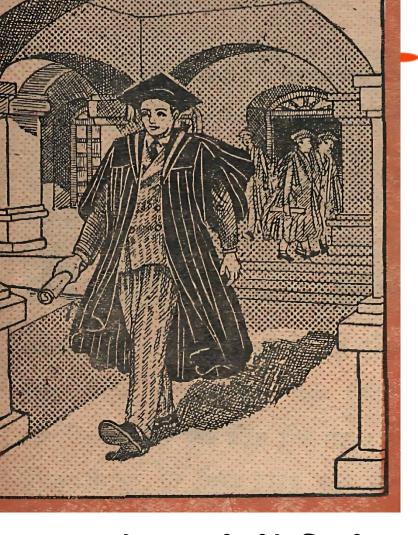
भरपेट, मनचाही चीजें खिलाती। अच्छे अच्छे कपड़े पहनने को देती। लेकिन जयपाल को इस बात का ध्यान न रहता कि उसी के कारण माँ को इतना कष्ट उठाना पड रहा है। इसलिए उसे मितव्यय का ख्याल न रहता। वह खूब खर्च करता फिर भी, लडके को इस तरह खर्च करते देख कर भी गौरी उसे कुछ न कहती। वह सोनती-"बड़ा होने के बाद वही सीख लेगा।" इस तरह वह बड़े धीरज के साथ उसका सब उत्पात सह लेती। लेकिन ज्यों ज्यों उसकी उमर बढ़ती गई त्यों-त्यों जयपाल का खर्च भी बढ़ता गया। लेकिन था वह बड़ा तेज। मैट्रिक में वह अव्वल दर्जे में पास हुआ। इससे उसकी माँ को और भी खुशी हुई। वह और भी मेहनत करके रुपए कमाने लगी। और चार बरस बाद जयपाल बी. ए. पास हो गया। अब उसकी माँ की खुशी का ठिकाना न रहा।

उसने सोचा-"अब और क्या है? मेरा लड़का बड़ी नौकरी करेगा। खूब रुपए कमाएगा। तब मुझे मेहनत करने की जरूरत न रहेगी। मेरे सारे सङ्कट टल जाएँगे। वनगाँव के जमींदार बाबू रामचरण लखपति थे। हर साल हजारों की आमदनी थी। लेकिन कोई ऐसा न था जो उनकी जमीन-जायदाद सम्हालता। इससे उनको बड़ा नुकसान होता। इसलिए वे बहुत दिनों से अपने मित्रों से कहते आ रहे थे कि उन्हें एक विश्वास पात्र आदमी चाहिए, जो उनका सारा कौसे-काज सम्हाल सके। रामचरण के दोस्त बाबू श्यामलाल बहुत से उम्मेदवार ले आए। लेकिन कोई उन्हें

पसन्द न आया। तब उन्होंने जयपाल को उनके सामने लाकर खड़ा किया। जयपाल देखने में भलामानुस मालूम होता था। तिस पर हाल ही में बी. ए. पास किया था। इसलिए उसे देखते ही रामचरण को खुशी हुई। उन्होंने सोचा कि आज उनके लायक आदमी मिला है। लेकिन जमीन-जायदाद का मामला था। जरा सोच-विचार कर काम लेना था।

इसलिए रामचरण ने तय किया कि खुद जाकर उसका हाल-ढाल देख आएँ। वे जयपाल के घर चले। घर के बाहर गौरी उपले पाथ रही थी। एक भले आदमी को आया देख उसने जयपाल को पुकारा। जयपाल बाहर निकला और रामचरण को अन्दर ले गया । कमरे की सफाई-सुथराई देख कर रामचरण को बहुत अचरज हुआ। सब चीजें करीने से रखी हुई थीं। उन्होंने खुश होकर कहा-"कल सबेरे तुम दफ्तर में आकर मुझसे मिलो !" बातें करके दोनों घर से बाहर आए। रामचरण के साथ-साथ जयपाल भी कुछ दूर गया। घर के बाहर उपले पाथती फटे-हाल गौरी की ओर उँगली उठा कर रामचरण ने पूछा-"यह कौन है?"
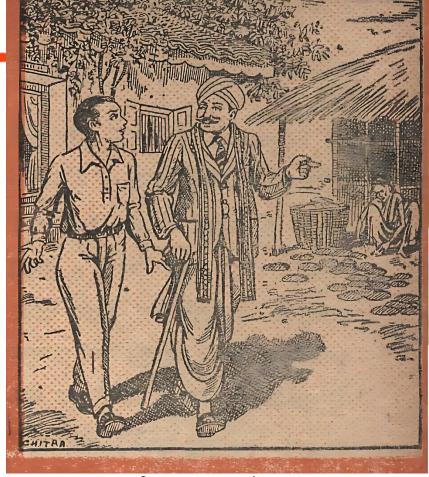
जयपाल को यह बताने का साहस न हुआ कि यह उसकी माँ है। इसलिए अचानक उसके मुँह से निकल पड़ा-"यह मेरी नौकरानी गौरी है। रामचरण ने उसकी बात सच मान ली। दूसरे दिन श्यामलाल अपने दोस्त रामचरण से मिले। रामचरण ने अपना इरादा उन्हें जता दिया। उन्होंने कहा "मैं जयपाल को दौ सौ रुपए वेतन पर अपना मेनेजर बना रहा हूँ।" यह सुन

कर श्यामलाल ने भी उनकी बहुत बड़ी तारीफ की। उन्होंने कहा-"ठीक है ! जयपाल को नौकरी देने का निश्चय करके आपने बड़ा ही पुण्य किया है। बेचारी उसकी माँ गौरी उसके लिए कितना मेहनत करती रहती है।" यह सुन कर रामचरण को कुछ याद आ गया। उन्होंने कुछ चौंक कर कहा-"क्या कहा आपने ? गौरी उसकी माँ है ? वह कहाँ रहती है ? चलिए ! एक बार उसे देख आएँ !" "क्या आपने गौरी को नहीं देखा ? वह तो हमेशा अपने घर के बाहर ही उपले पाथती रहती है। आपकी नजर जरूर उस पर पड़ी होगी !" श्यामलाल ने कहा। "तो क्या वह उसकी माँ थी !" यह कह कर रामचरण मौन रह गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपनी मुलाकात का सारा हाल श्यामलाल से बता दिया। ठीक समय पर जयपाल बड़े ठाठ-बाट से सज-धज कर रामचरण के दफ्तर में आया और दरबान के हाथ अपना विजिटिंग कार्ड भेज दिया।

दरबान ने लौट कर कहा-"बाबूजी आपसे नहीं मिलना चाहते।" यह कह कर एक कागज का पुर्जा उसके हाथ में डाल दिया। जयपाल ने चकित होकर वह पुर्जा खोला। उसमें लिखा था-"जो अपनी माँ को नहीं पहचानता, वह दुनिया में और किसे पहचानेगा ? मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। तुम जा सकते हो।" जयपाल लज्जा से कट गया और अपना-सा मुँह लेकर चुपचाप चला गया।
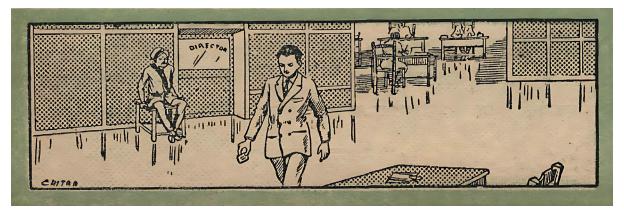
अपने सफेद घोड़े पर सवार होकर उदय आगे आगे चल रहा था। दिन होने के कारण उदय को देखने में कोई तकलीफ न थी। लेकिन निशीथ और प्रदोष की क्या हालत थी ? वे तो दिन में आँखें रहते भी अन्धे थे न ? इसलिए वे आगे जाने वाले उदय के घोड़े की टाप पर कान रखे चले जा रहे थे। धीरे धीरे सूरज डूबने लगा। "अब तुम्हारी बारी है। आओ, प्रदोष ! राह दिखाओ !" उदय ने पुकारा। झट प्रदोष आगे आया और राह दिखाने लगा। निशीथ और उदय उसके पीछे पीछे चलने लगे। यों जाते जाते रात हो आई और वे तीनों एक घने जङ्गल में जा पहुँचे।

अन्धेरा होने के कारण अब प्रदोष और उदय को आराम करना चाहिए था। लेकिन उस आधी रात को, उस जङ्गल में वे कहाँ आराम करते ? तब निशीथ ने उन दोनों को एक पेड़ पर बिठा दिया और कहा-"तुम दोनों यहाँ रहो ! मैं जाकर रात काटने लायक कोई जगह ढूँढ़ आता हूँ।" यह कह कर उसने उन दोनों के घोड़ों को उसी पेड़

से बाँध दिया और खुद काले घोड़े पर सवार होकर चला। निशीथ इस तरह बहुत दूर जाकर आखिर जङ्गल के बीचों-बीच एक उजड़े मकान के नजदीक पहुँचा। उसने दरवाजा खटखटाया। लेकिन किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने खिड़की के नजदीक जाकर अन्दर झाँका। अन्दर कोई नहीं था। तब उसने धक्का मार कर किवाड़ खोला और अन्दर प्रवेश किया। सारे घर में सन के गठ्ठरों के ढेर लगे हुए थे। उनके अलावा उस घर में कोई अजीब बात न थी। वह थोड़ी देर तक वहाँ टहरा जिससे घर में रहने वाले आ जाएँ तो उनसे बात कर ले।

लेकिन जब बहुत समय बीतने पर भी कोई नहीं आया तो उसने निश्चय कर लिया कि इस घर में कोई नहीं रहता। उसने सोचा कि मकान अच्छा है। वह अपने भाइयों के साथ वहाँ रात काट सकता है। इसलिए फिर अपने काले घोड़े पर सवार हो गया और जिस पेड़ पर उदय और प्रदोष थे, उसकी ओर चला। उधर निशीथ के चले जाते ही प्रदोष और उदय को पेड़ के नीचे कोई आहट सुनाई दी।

उन्होंने सोचा-"जङ्गल है। शायद कोई जानवर आ गया होगा।" इसलिए वे उसकी ओर ध्यान न देकर निशीथ के लौट आने की राह देखने लगे। थोड़ी देर बाद उदय ने अपनी कमर टटोल कर देखी। उसे ऐसा लगा जैसे कोई सन के रेशे लिपट गए हों। उसने प्रदोष से यह बात कह दी। तुरन्त प्रदोष ने कहा-"हाँ ! हाँ ! ऐसी कोई चीज़ मेरी कमर में भी लिपट गई है। क्या है यह ?" वे अपना दिमाग लड़ा ही रहे थे कि उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई दोनों की कमर से रस्सी बाँध कर खींच रहा हो। उन्होंने अपने चारों ओर टटोल कर देखा। लेकिन कोई आदमी न

दिखाई पड़ा। इतने में उन्हें किसी की आवाज सुनाई दी-"बड़े-बड़े बहादुर भी मुझे न देख सके। तुम लोग क्या देखोगे ?" ज्यों ही ये बातें सुनाई दीं त्यों ही उदय और प्रदोष ने जान लिया कि किसी भूत या प्रेत ने उन दोनों को रस्से से जकड़ लिया है। लेकिन उन्हें न सूझा कि क्या करें ? "अभी हमारा भाई निशीथ यहाँ नहीं है। नहीं तो हम तुम्हारी खूब खबर लेते। अच्छा, अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है। हमारा भाई आता ही होगा। अगर तुम अपना भला चाहते हो तो तुरन्त यहाँ से भाग जाओ। नहीं तो वह तुम्हें सीधे यमपुरी भेज देगा।" उन्होंने उस अदृश्य भूत को धमकाया। लेकिन उनका दुश्मन भी कोई मामूली आदमी नहीं था। उसने कहा-"अरे भई ! इन बन्दर-घुड़कियों से यहाँ कोई डरने वाला नहीं। तुम्हारे भाई की क्या बात, वैसे सौ आदमी भी मेरा बाल-बाँका नहीं कर सकते। लेकिन मैं उस के आने तक यहाँ थोड़े ही ठहरा रहूँगा !" यह कह कर वह व्यक्ति उन दोनों को अपनी

इसलिए वह उन दोनों को ढूँढ़ता हुआ अपने काले घोड़े पर सवार होकर, सारे जङ्गल में घूमने लगा। लेकिन कहीं उनका पता न चला।

तब तक तीन पहर रात बीत चुकी थी। और दो घण्टों में सवेरा होने वाला था। सवेरा होने पर वह खुद अन्धा हो जाता और एक कदम भी आगे न बढ़ सकता। इसलिए उसने और एक बार सारा जङ्गल छान डाला। लेकिन कोई फायदा न हुआ। आखिर उसके मन में एक विचार उठा। "कहीं वे भी उस उजड़े घर की ओर तो नहीं चले गए ?" उसने सोचा। तुरन्त वह घोड़े को दौड़ाते हुए उस घर की ओर लौट पड़ा। उसने सोचा कि दोनों भाइयों के घोड़े बाहर ही बँधे होंगे। लेकिन वहाँ पहुँचने पर जब घोड़े नहीं दिखाई पड़े तो उसे निराशा हुई। लेकिन उसने सोचा-"जब यहाँ तक आ ही गया हूँ तो एक बार अन्दर जाकर देख क्यों

दाढ़ी से बाँध कर ले चला। वास्तव में वह एक बौना था और दोनों भाइयों को जिस चीज़ से बाँध रखा था वह उसकी दाढ़ी ही थी। जाते जाते उसने दोनों घोड़ों पर कोई बुकनी झोंक दी जिससे वे तुरन्त छू-मन्तर हो गए। थोड़ी देर बाद निशीथ ने उस पेड़ के नजदीक आकर देखा तो उसके भाइयों और उनके घोड़ों का कहीं पता न था। उसे न सुझा कि बात क्या हुई। उसने सोचा-"आने में देर होने के कारण शायद वे दोनों पेड़ से उतर कर, अपने घोड़ों पर सवार होकर उसे ढूँढने चल दिए हैं।

न लूँ ?" वह किवाड़ में धक्का देकर अन्दर चला गया। आश्चर्य ! एक सन के रस्से से बँधे हुए उदय और प्रदोष अन्दर सो रहे थे ! उनके नजदीक ही जमीन पर खून के धब्बे भी दिखाई पड़े। यह कैसा भीषण कृत्य था ! उदय का एक हाथ ऐसा गायब था कि उसके कटने की कहीं निशानी न थी। यह सब देख कर निशीथ का दिमाग चकरा गया। उसने अपने आपको सम्हाल कर दोनों भाइयों को जगाया। निशीथ को देखते ही उन दोनों की जान में जान आ गई।

"भैया ! तुम उस दुष्ट के हाथों से बच कर कैसे आए? हमें तो फिर कभी मिलने की आशा ही न रह गई थी।" यह कह कर दोनों ने निशीथ को गले से लगा लिया और आँसू बहाने लगे। "डरो नहीं ! तुम दोनों यहाँ कैसे आ गए ? बात क्या हुई थी ? यह रस्सी कैसी ? भैया ! तुम्हारा हाथ कहाँ गया ? ये खून के बूँद कैसे आए ?' निशीथ ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।
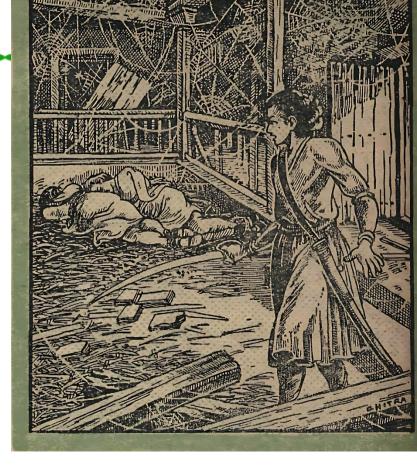
"यह सब हमारी बदनसीबी नहीं तो क्या ? तुम्हारे जाने के बाद किसी ने हमें बाँध कर इस घर में लाकर डाल दिया। हम अँधेरे में न जान सके कि वह दुष्ट कौन है और हमें कहाँ ले जा रहा है ? हम सवेरा होने की राह देखने लगे। सवेरा होने लगा तो मुझे कुछ कुछ दिखाई देने लगा। हमें जिसने लाकर यहाँ रखा, वह एक अजीब आदमी था। उसे देख कर हमें हँसी भी आई और गुस्सा भी
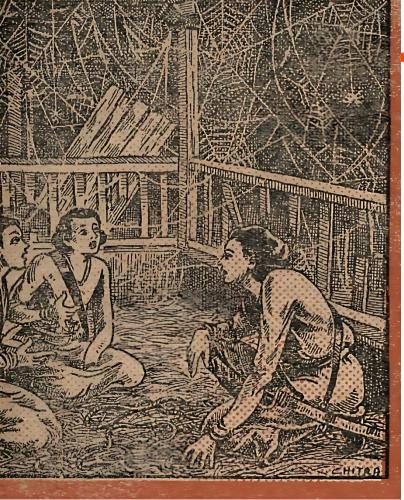
हुआ। वह ठीक बारह अंगुल लम्बा आदमी था। लेकिन उसकी दाढ़ी गजों लम्बी थी। उसने उस दाढ़ी को हमारी कमर में लपेट कर हमें बाँध लिया। वह अभी तक हमारी बगल में ही सो रहा था। अभी वह कहीं गया है। उसने जमीन पर तुम्हारे पैरों की निशानी देखी। "मालूम होता है, तुम्हारा आई भी यहाँ आया था। ठहरो, उसे भी पकड़ लाता हूँ !" यह कह कर वह गुस्से में यहाँ से उठ कर जाने लगा। लेकिन वह जल्दी में भूल गया था कि हम उसकी दाढ़ी से बँधे हुए हैं। मुझे गुस्सा आ गया तो मैंने दाढ़ी के कुछ बाल नोच लिए। बस, उसकी दाढ़ी से खून टपकने लगा। तब उसने आँखों से आग उगलते हुए कहा-"अच्छा ! तेरी यह हिम्मत ! देखना ! तुझे कैसा मजा चखाता हूँ ? मेरी इस दाढ़ी में मेरी जान रहती है। तूने अभी इसके कुछ बाल उखाड़ लिए। अब ये बाल फिर कब पैदा होंगे ? अच्छा, ले ! मैं तुझे इस बदमाशी की सजा देता हूँ।"

यह कह कर उसने अपनी जेब से कोई बुकनी निकाली और बाँह पर मल दी। बस, मेरी बाँह गायब हो गई। इसके बाद उसने अपनी दाढ़ी कतर डाली। इस तरह हम बँधे ही रहे और वह दूर चला गया। लेकिन सब से अजीब बात यह थी कि उसकी दाढ़ी कतरते ही फिर ज्यों की त्यों हो गई।" यह कह कर दोनों भाइयों ने किस्सा खतम किया। यह सब सुनकर निशीथ को बहुत अचरज हुआ।

इतने में सबेरा हो गया। तब उदय ने कहा-"अब देर क्यों की जाए ? वह तुम्हें खोज कर अब लौट कर आता ही होगा। भाई निशीथ ! सबेरा हो गया। इसलिए अब तुम्हें तो दिखाई नहीं देगा। तुम कुछ नहीं कर सकोगे। इसलिए मेरे बदले तुम रस्सी से बँध जाओ। होशियारी के साथ इस तरह बैठे रहो जिसमें तुम्हारा एक ही हाथ उसे दिखाई दे। पीछे जो होगा, देखा जाएगा।"

दोनों भाइयों को उसकी बात जँच गई। निशीथ ने उठ कर दोनों के बन्धन खोल दिए। उदय ने निशीथ को प्रदोष के साथ बाँध दिया। उसने बाहर जाकर निशीथ के उदय ने काले घोड़े को थोड़ी दूर ले जाकर फिर एक एक खोह में छिपा दिया। फिर लौट कर उस उजड़े घर के नजदीक झाड़ी में छिप कर बैठ गया। दोपहर के समय वह लम्बी दाढ़ी वाला झाड़ी में छिपे हुए उदय के नजदीक से ही गुजरा। वह
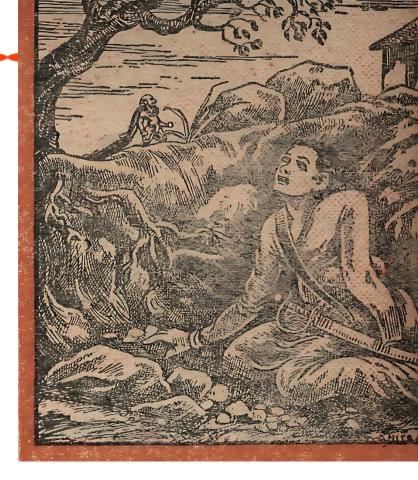
भूनभुनाता हुआ जा रहा था-"अच्छा ! देखूँगा, वह मुझसे बच कर जाएगा कहाँ ? आज नहीं तो कल जरूर पकड़ा जाएगा।"

उदय ने उसको घर में घुसने दिया। फिर एक खिड़की के नजदीक जाकर झाँक कर देखने लगा कि वह अन्दर क्या कर रहा है ? उसने एक विचित्र दृश्य देखा। उस लम्बी दाढ़ी बाले बौने ने अपनी जेब से बौना कोई बुकनी निकाल कर निशीथ और प्रदोष पर छिड़क दी। तुरन्त वे दोंनो ऐसे छू-मन्तर हो

गए कि नामो-निशान नहीं रह गया। उसके बाद उसने अपने गले से एक हार निकाल कर टाँगनी पर लटका दिया। बस, उसकी दाढ़ी लापता हो गई और वह एक मामूली आदमी बन गया। खिड़की में से उदय यह सब देख रहा था। थोड़ी देर बाद बौना लेट गया और खर्राटे भरने लगा। मौका देख कर उदय ने उस घर में प्रवेश किया और उस हार को चुरा कर अपने गले में डाल लिया। बस, उदय भी लम्बी दाढ़ी वाला बौना बन गया। यह परिवर्तन देख कर उदय को हँसी आ गई। उसने सोचा -"तो सारा रहस्य इसमें छिपा हुआ है!" इसके बाद उसने अपनी जेबें टटोल कर देखीं। एक जेब में सफेद बुकनी भरी हुई थी। दाढ़ी वाले ने इसी बुकनी से पेड़ के नीचे घोड़ों और घर में उसके भाइयों को गायब कर दिया था। दूसरी जेब में लाल अञ्जन की एक डिबिया थी। उसने उसके जरिए उदय का हाथ गायब कर दिया था। तीसरी जेब में उसी तरह के हरे अञ्जन की डिबिया, एक तौलिया और एक तरह की काली बुकनी की पुड़िया थी। इनका क्या प्रयोजन है, यह उदय की समझ में न आया।

[दाढ़ी वाले का रहस्य जान लेने के बाद उदय उन करामाती बुकनियों के जरिए क्या कर सका ? क्या उतने से उस बौने ने उसका पिण्ड छोड़ दिया ! आदि बातें अगले अङ्क में पढ़िए।]

किसी समय एक गन्दा लड़का था। सफाई किस चिड़िया का नाम है, वह यह भी जानता न था। बदन पर मैल जमा हुआ रहता था। कपड़ों पर स्याही के धब्बे भरे रहते थे। वह चाहे कितने ही अच्छे कपड़े क्यों न पहने, दूसरे ही क्षण गन्दे हो जाते थे। मुँह कभी नहीं धोता था। नहाने से कन्नी कटाता रहता था। एक दिन उसके कमरे में एक परी ने आकर कहा- "देखो तो, तुम्हारा कमरा कितना गन्दा है ? जमीन पर धूल जमी हुई है। जहाँ देखो वहीं किताबें फर्श पर बिखरी हैं। तुम्हारा बिछौना कितना मैला है ? छि ! तुन्हारा कमरा अभी साफ करना चाहिए। जाओ ! बाहर जाकर थोड़ी देर तक अपने भाई के साथ खेलो !" उस परी ने कहा। "मेरा कोई भाई नहीं है।" गन्दे लड़के ने जवाब दिया। "तुम्हारे भाई क्यों नहीं ? जरूर है। शायद तुम उसे नहीं जानते। लेकिन वह तुम्हें जानता है। बाहर जाकर खड़े हो जाओ। वह तुम्हें जरूर दिखाई देगा।" उस परी ने कहा।

"देखूँगा, तुम्हारी बात कहाँ तक सच है ?" यह कहते हुए गन्दा लड़का बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद पास के पेड़ से एक गिलहरी उतरी। "गिलहरी ! गिलहरी ! क्या तुम्हीं मेरे भाई हो ?" गन्दे लड़के ने उससे पूछा। "क्या कहा ? जरा मेरी ओर देखो ! मैं कितनी साफ हूँ ? मेरा घोंसला देखो ! मेरे बाल-बच्चों को देखो ! हम तुम्हारी तरह कभी गन्दगी बर्दाश्त नहीं कर सकते।" यह कह कर गिलहरी वहाँ से चली गई। थोड़ी देर बाद उधर से एक

आलोक मित्र

मैना उड़ती हुई आ गई। "मैना ! मैना ! क्या तुम्हीं मेरे भाई हो !" गन्दे लड़के ने पूछा। "मेरी अभी इतनी बदकिस्मती नहीं कि मैं तुम्हारा भाई बन जाऊँ। जरा मेरी ओर देखो ! मैं कितनी साफ हूँ। मेरी देह पर कहीं जरा सी मैल दिखा सकते हो ?" मैना ने कहा। यह कह कर वह गुस्से में वहाँ से उड़ गई। थोड़ी देर में उधर से एक बिल्ली आई। "म्याऊँ ! म्याऊँ ! क्या तुम्हीं मेरे भाई हो ?" गन्दे लड़के ने पूछा। "वाह ! वाह ! क्या सवाल किया तुमने ? जानते हो, आज सवेरे से अब तक मैं छः बार नहा चुकी हूँ। कोई तुम्हें देखेगा तो मेरी हँसी भी उड़ाएगा कि यह कैसा भाई मिला तुम्हें ?" यह कह कर बिल्ली दुम हिलाती हुई वहाँ से चली गई। थोड़ी देर बाद उधर से एक सूअर जाने लगा। उसके बदन पर गन्दगी की मोटी मोटी तहें जमी हुई थीं। लड़के ने उसे देख कर घृणा से मुँह फेर लिया। उसने उससे अपना सवाल नहीं किया। लेकिन सूअर लड़के को देख कर रुक गया। "क्यों भैया !" कह कर उसने लड़के को पुकारा।

"कौन तुम्हारा भाई है यहाँ ! भागो यहाँ से!" लड़के ने जवाब दिया। "वाह ! वाह ! तुम मेरे भाई क्यों नहीं हो ? तुम तो मेरे सगे भाई हो। जरा अपनी ओर नजर डालो, और फिर मेरी ओर देखो ! बराबर पाते हो न? यहीं नजदीक में एक गन्दा गढ़ा है। मैं उसमें लोटने जाता हूँ। आओ मेरे साथ !" सूअर ने कहा। "छिः ! मैं कीचड में क्यों लोटने लगा ?" लड़के ने जवाब दिया। "मेरे सामने शेखी न बघारो ! क्या तुमने मुझे अन्धा समझ लिया है ? आओ ! मेरे साथ चल कर तुम भी आराम से कीचड़ में लोटो !"
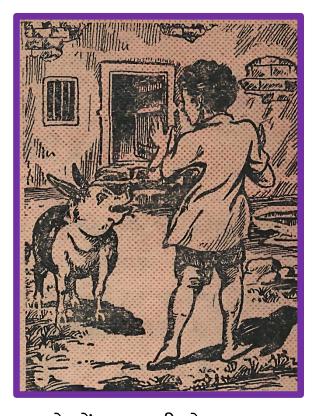
इतने में उस परी ने बाहर, उस लड़के के पास आकर कहा- सूअर ने न्यौता दिया। "मैं नहीं आऊँगा !" यह कह कर वह लड़का रोने लगा। "मैंने तुम्हारा कमरा साफ कर दिया है। फिर उसे गन्दा न कर देना ! क्यों, तुम अपने सूअर भाई के साथ जाओगे कि मेरे साथ अन्दर चलोगे ? "मैं तुम्हारे साथ अन्दर चलूँगा।" यह कह कर लड़के ने परी का हाथ ज़ोर से पकड़ लिया। "जाओ ! तुम्हारे जाने से मेरा कोई नुकसान नहीं !" यह कह कर सूअर वहाँ से चला गया।

किसी किसान की तीन लड़कियाँ थीं। उनमें छोटी सबसे खूबसूरत थी। उसका नाम सुन्दरी था। वह रूप में ही नहीं, गुणों में भी सुन्दरी थी। लेकिन उसकी बड़ी बहनें बड़ी खोटी थीं। वे सारा काम सुन्दरी से करातीं। तिस पर हमेशा उसको डाँटती रहती थीं। इतना ही नहीं, वे भोली-भाली सुन्दरी को 'पगली' कह कर पुकारती थीं। लेकिन सुन्दरी सब कुछ बर्दाश्त करती जाती थी। एक दिन उनके पिता ने शहर जाते वक्त उनको बुला कर पूछा कि "तुम तीनों को क्या चाहिए ?" बड़ी लड़की ने एक सुन्दर माला माँगी। मँझली ने रेशमी साड़ी माँगी। "मुझे एक चाँदी की थाली और एक शीसे का बेर चाहिए।" सुन्दरी ने माँगा। पिता के जाने के बाद उसकी दोनों बड़ी बहनें बड़ी उतावली के साथ उसके लौटने की राह देखने लगीं। लेकिन सुन्दरी घर का सारा काम-काज करती, माँ की सेवा-टहल में लगी रही।

एक हफ्ते बाद उनका पिता लौटा। दरवाजे पर उसकी आहट पाते ही सुन्दरी की दोनों बहनें जाकर उससे लिपट गईं। लेकिन सुन्दरी पिता के पैर धोने के लिए पानी ले आई और हाथ में तौलिया लिए खड़ी रही। "बेटी! तुम्हारी माँगी हुई चीज़ों को खोजने के लिए मुझे सारा बाजार छान डालना पड़ा। लेकिन अन्त में मिल गईं।" पिता ने सुन्दरी से कहा। "हाय ! मैंने अपने पिता को नाहक कष्ट दिया।" सुन्दरी ने सोचा। "ये चीजें क्या करोगी बेटी !" उसके पिता ने पूछा। "मैं इस शीसे के बेर को इस चाँदी की थाली में रख

कुमारी श्यामा

कर घिसूँगी।" सुन्दरी ने जवाब दिया। "पगली बिटिया ! यह भी कोई काम है !" उसकी बात सुन कर पिता ने हँस दिया। बड़ी लड़की ने माला पहन ली। मँझली ने रेशमी साड़ी पहन ली। दोनों बहुत खुश थीं। सुन्दरी शीसे के बेर को चाँदी की थाली में घिसने लगी। थोड़ी देर बाद सुन्दरी को उस थाली में सारा संसार दिखाई देने लगा। गद्दियों पर बैठे राजा लोग, समुन्दर में सफ़र करते हुए जहाज, अनेक नगरों के बड़े बड़े महल, सब उसकी आँखों के सामने चित्र की तरह दिखाई देने लगे। उन्हें देख कर सुन्दरी को बहुत आश्चर्य हुआ और वह बहुत आनन्दित हुई। उसका आनन्द देख कर उसकी दोनों बहनें मन ही मन जलने लगीं। उनके मन में हुआ कि किसी तरह वह बेर और वह थाली हड़प लें। इसलिए बड़ी बहन ने उससे कहा-"बहन ! मेरी माला लो और वे चीजें मुझे दे दो!" मँझली ने कहा-"बहन ! मेरी रेशमी साड़ी ले लो और अपनी चीजें दे दो!"लेकिन सुन्दरी ने इन्कार कर दिया। अब
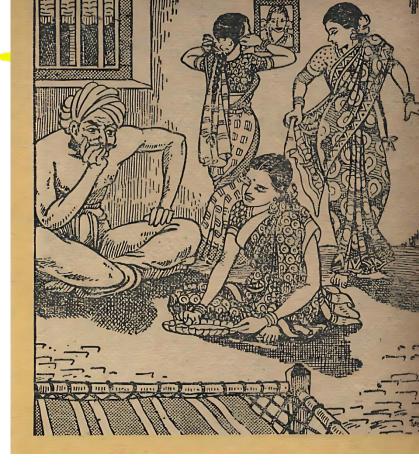
डाह ही नहीं, मन ही मन दोनों को उस पर गुस्सा भी हुआ। "अब इससे माँग कर कोई फायदा नहीं। हम इसको मार डालेंगी तो वे चीजें आसानी से हमारे हाथ लग जाएँगी।"

दोनों बहनों ने एक दूसरे से कहा और एक षड़यन्त्र रचा। दूसरे दिन दोनों ने सुन्दरी को बुला कर कहा-"बहन ! हम दोनों वन में फल तोड़ने जा रही हैं। वे सब हमीं ढोकर नहीं ला सकतीं। इसलिए तुम भी हमारे साथ आओ !" सुन्दरी ने उनकी बात मान ली और तीन टोकरियाँ अपने
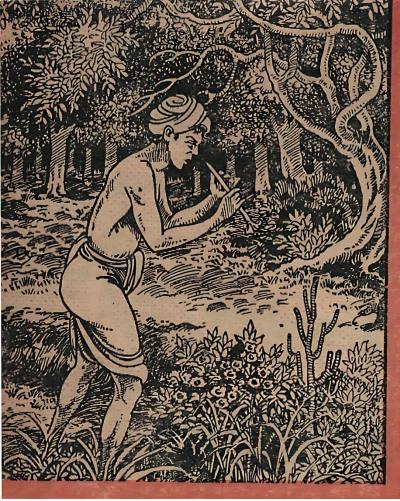
हाथ लेकर उनके साथ चली। जाते समय उसने अपनी चाँदी की थाली और शीसे का बेर पिता को रखने के लिए दिए। तीनों बहनें बड़ी देर तक चलती रहीं और आखिर जङ्गल पहुँचीं। थोड़ी देर तक फल तोड़ने के बाद दोनों बहनों ने सुन्दरी से पूछा-"तुम्हारी दोनों चीजें कहाँ हैं? हमें दे दो!" तब सुन्दरी ने जवाब दिया कि वे उसके पास नहीं हैं। लेकिन बहनों ने उसकी बातों पर विश्वास न किया। उन्होंने सोचा कि वह झूठ बोल रही है। इसलिए उन्होंने एक कुल्हाड़ी से उसे मार डाला। लेकिन जब थाली और शीसे का बेर नहीं मिले तो वे निराश होकर घर पहुँची और झूठ-मूठ रोने-धोने लगीं।

"जङ्गल में एक भेड़िया घूम रहा था। शायद वही सुन्दरी को उठा लें गया। हमने उसे बहुत ढूँढ़ा। लेकिन कहीं पता न चला।" उन्होंने अपने माँ-बाप से कहा। यह सुन कर उनके माँ-बाप बहुत रोए। कुछ दिन बाद एक ग्वाले का लड़का अपनी भटकी भेड़ को ढूँढ़ते हुए जङ्गल में उस जगह पहुँचा, जहाँ सुन्दरी मारी गई थी। वहाँ उसे झाड़ियों में एक विचित्र पौधा दिखाई दिया। देखने में वह बाँस की तरह दीखता था। लेकिन उस पर सुन्दर नीले फूल खिल रहे थे और लाल फल लगे हुए थे। ग्वाले ने उस पौधे को तोड़ लिया। उसने सोचा कि इसमें छेद करके वह बाँसुरी की तरह बजाएगा। लेकिन वह नली उसके होठों से लगते ही गाने लगी-"बज री बंशी! बज री बंशी ! मात-पिता की जय कह बशी ! बड़ी और मँझली बहनों ने, वन

में फल तोड़ने बुला कर, थाली और बेर के हित ही, मुझे मार डाला इस थल पर !" तब ग्वाले का लड़का यह विचित्र बंशी लेकर गाँव की ओर दौड़ा। गाँव के लोगों ने भी बड़े अचरज से यह विचित्र गाना सुना। "हाय ! बेचारी ! किन सत्यानाशिनों ने उसे मार डाला !" सब आपस में कहने लगे। आखिर यह बात उस किसान के कानों में भी पहुँची। सुन कर उसकी आँखों में आँसू आ गए।

उसने तुरन्त ग्वाले के लड़के के पास जाकर कहा-"मुझे वह जगह जरा दिखाओ जहाँ तुम्हें वंशी मिली थी !" दोनों मिल कर उस जगह गए। उस जगह उस पौधे की जड़ से अब भी यही गाना सुनाई दे रहा था। जब किसान ने उस जगह खोदा तो उसे अपनी छोटी लड़की सुन्दरी गड़ी हुई दिखाई दी। उसे देखने से ऐसा मालूम होता था जैसे वह अभी सो रही हो; मरी नहीं हो ! किसान माथा पीट कर रोने लगा। तब उस पौधे की जड़ से उसे यह गाना सुनाई देने
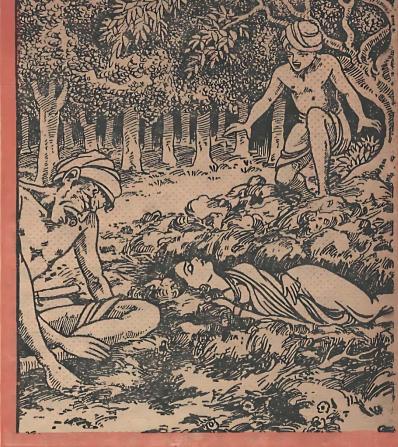
लगा-"राजा के लोटे का पानी, लाकर मुझ पर छिड़कोगे तो, तुरन्त उठ खड़ी हो जाऊँगी, मैं फिर जल्दी जी जाऊँगी !"

यह गाना सुन कर किसान के मन को कुछ तसल्ली हुई। उस ग्वाले के लड़के को वहीं छोड़ कर, वह तुरन्त दौड़ा दौड़ा राजा के पास गया और सारी बात उससे कह सुनाई। तब राजा ने कहा -"इसमें क्या रखा है? मेरे लोटे का पानी जरूर ले जाओ! हाँ, तुम्हारी लड़की जब जी जाए तो जरा उसे लाकर हमें दिखा देना!" आनन्द के साथ

वह पानी लेकर किसान उलटे पाँव जङ्गल गया और वह पानी अपनी बिटिया पर छिड़क दिया। तुरन्त सुन्दरी आँखें मलती हुई उठी, जैसे अभी वह नींद से जागी हो। पिता को देखते ही उसने रोते हुए उसे गले से लगा लिया। यह सब देख कर उस ग्वाले के लड़के की आँखों से आँसू बहने लगे। तुरन्त सुदरी को साथ लेकर किसान राजा के सामने जा खड़ा हुआ। राजा ने सुन्दरी की बहनों को भी बुलाया। "इन हत्यारिनों को जीने नहीं देना चाहिए। आज सूरज डूबने के पहले ही इन दोनों को मार डालो !" राजा ने उन बहनों को उनके पाप का दण्ड दिया। फिर उसने सुन्दरी से कहा-"चाँदी की थाली और शीसे का बेर कहाँ हैं ? लाओ, मुझे दिखाओ !" तब किसान ने वे दोनों चीजें ला दीं। सुन्दरी ने दोनों चीजें राजा की भेंट कर दीं। राजा को उस थाली में अनेक तमाशे दिखाई दिए। जब अपनी बेटी के साथ घर लौटने के लिए किसान राजा से इजाजत लेने लगा तो राजा ने उससे कहा- "तुम्हारी बिटिया की दोनों चीजें राजाओं के पास रहने लायक हैं। तुम्हारी बिटिया रानी बन कर किले में रहने लायक है।" यह बात सुन कर सुन्दरी ने शरम से सिर झुका लिया और कहा-"लेकिन मेरी एक इच्छा है। इस आनन्द के समय मैं अपनी बहनों को कोई दण्ड दिलाना नहीं चाहती।" राजा ने उसकी बात मान कर उसकी बहनों को माफ कर दिया। शुभ समय पर राजा के साथ सुन्दरी का ब्याह बड़ी धूम-धाम से हुआ।इससे सबको खुशी हुई। तब से किसान अपने परिवार के साथ किले में आकर रहने लगा। यह सब कुछ हुआ उस ग्वाले के लड़के के जरिए न ? इसलिए सुन्दरी कभी उसे नहीं भूली। उसने उसको खूब इनाम-इकराम दिया और बराबर भाई की तरह देखती रही।

राम और रावण की लड़ाई खतम हो गई है। संसार को सताने वाला, दस सिर वाला रावण और उसकी सेना नष्ट हो गई है न ? भगवान रामचन्द्र अपनी सेना के जय-जयकार के साथ सुख के सागर में स्नान कर रहे हैं। हाँ, तो भगवान रामचन्द्र की सेना कैसी थी ? बन्दर भालुओं की ही न ? यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिए। "जब काम पूरा हो गया तो लङ्का में क्यों रहा जाए ? अयोध्या चलेंगे।" भगवान रामचन्द्र ने कहा। तुरन्त विभीषण जाकर पुष्पक विमान ले आया। हाँ, तो पुष्पक विमान जानते हो न ? बड़ा विचित्र विमान था ! कहते हैं कि उस पर चाहे कितने ही लोग क्यों न चढ़ें, और एक के चढ़ने के लिए उस पर जगह जरूर रहती थी। हाँ, तो राम, सीता, लक्ष्मण और अन्य प्रमुख लोग विमान पर चढ़ गए। उनके साथ हनुमान भी चढ़ा। वानर सेना के सेनापति अङ्गद, सुग्रीव आदि नीचे खड़े हो गए। "हाँ, तो अब हम बिदा लेते हैं।" यह कह कर राम ने वानर सेना की ओर एक स्नेह भरी निगाह डाली। "कृपा बनाए रखिएगा।" वानर सेना के नेताओं ने गदगद कण्ठ से उनसे कहा।

भगवान रामचन्द्र ने अपनी सेना की ओर एक आखिरी निगाह डाली। उन्हें वानरों के चेहरों पर एक व्याकुलता दिखाई दी, जैसे वे कुछ कहना चाहते हों। उनमें से कुछ लोग एक दूसरे के कानों में कुछ फुसफुसा रहे थे। "खामोश!" उनके नेताओं ने उन्हें डपटा। लेकिन वानर-सेना की फुसफुसाहट दबने के बदले सभी कतारों में फैल गई। "हमारे सामने ही तुम लोगों की यह धृष्टता ?" यह सोच कर उनके नेताओं ने उनकी ओर एक
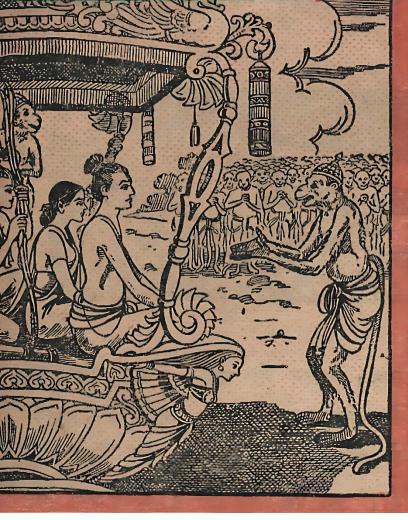
क्रोध भरी निगाह डाली। भगवान राम ने यह सब देख लिया। उन्होंने सुग्रीव आदि से कहा-"हे अङ्गद ! हे सुग्रीव ! तुम लोग वानर-वीरों को डाँटो नहीं। उनके मन में जो इच्छा है, साफ साफ कहने दो। ये कोई मामूली आदमी नहीं हैं। इन्हीं के कारण तो युद्ध में हमें विजय मिली ! अब इनको डाँटने-डपटने का समय बीत गया। अब इन पर स्नेह की वर्षा करो !" यह सुनते ही चानर-वीरों ने अपनी पूँछें ऊँची करके अपना सन्तोष प्रगट किया। तब वालिवान नाम के वानर ने निर्भीक होकर, आगे आकर कहा-"भगवन् ! आपने हमें अभय दिया। इसलिए मैं मन की बात बताता हूँ। हम वानर-वीर राम की सेवा के लिए ही पैदा हुए। यह सच है कि यहाँ का काम खतम हो गया है। लेकिन अब आप हमें यहाँ छोड़ जाइएगा तो हमारी क्या हालत होगी ! अगर भगवान रामचन्द्र ही हमें छोड़ देंगे तो हमें कौन पुष्पक विमान पर चढ़ाएगा ? हमारा शौक कैसे पूरा होगा ? मैंने जो कुछ कहा, उसमें कोई गलती हो तो हमें माफ करें !" "इतना ही नहीं; इस पुष्पक विमान का प्रभाव ऐसा है कि इसमें चाहें जितने आदमी चढ़ सकते हैं। फिर हम सभी इस पर क्यों नहीं चढ़ सकते ? इसमें किसी को कोई नुकसान तो है नहीं ?" और एक वानर ने पूछा।

इस तरह वानर सभी आपस में बातें करने लगे। यह देख कर लक्ष्मण ने झुञ्झला कर कहा- "देखा भैया ? ये अभी से आपस में झगड़ने लगे हैं। हम इन्हें अयोध्या ले जाएँगे तो क्या

इन्हें देख कर सब लोग हँसने नहीं लगेंगे ?" तब भगवान रामचन्द्र ने लक्ष्मण को फटकारा और वनरों से कहा-"भाइयो ! आप लोग व्याकुल न होइए। हम किसी को यहाँ छोड़ नहीं जाएँगे। हम सभी अयोध्या जाएँगे। इस दिव्य पुष्पक विमान के रहते हमें किस बात की कमी ? यह मुझे आप सबसे पहले ही कहना चाहिए था। लेकिन मैं भूल गया।" यह कह कर रामचन्द्र ने वानरों को शान्त किया। "हाँ ! हाँ ! हमसे कितनी बड़ी भूल हो गई ? अब पूछिए, इन वानर वीरों की और क्या क्या इच्छाएँ है ?" जानकी ने भगवान को सलाह दी। तब एक पेटू वानर ने डरते डरते अपने मन की इच्छा इस तरह प्रगट की-"भगवन् ! भक्तों को मन-चाहे वर देने में आपकी बराबरी कौन कर सकता है ? हाँ, कन्दमूल खा-खाकर हमारी जीभ बहुत ऊब गई है। हमने सुना है कि आप जैसे राजे-महाराजे स्वादिष्ट लड्डू वगैरह खाते हैं। लेकिन हमने कभी वे सब चीजें नहीं चखीं। क्या हमें उन्हें चखने का मौका न मिलेगा ?"
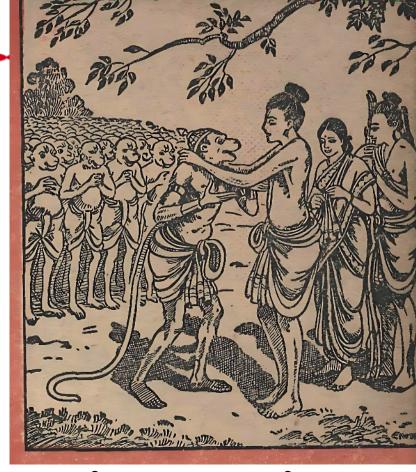
उसकी यह इच्छा सुन कर सीता-राम के मुँह पर एक मुसकुराहट खेल गई। तब हनुमान ने सोचा-"असल में हैं ये सब बन्दर। तिस पर लड़ाई में जीत कर खुशी से फूले हुए हैं। फिर रामचन्द्र ने इन्हें मनचाही चीज़ माँगने की इजाजत भी दे दी है। अब ये लोग न जाने क्या क्या माँगने लगेंगे ! यह सोच कर हनुमान ने बानरों की तरफ फिर कर एक हुङ्कार जो भरी तो सभी बन्दरों ने तुरन्त भय से सिर झुका लिया। लेकिन भगवान ने कहा -"भाइयो! तुम
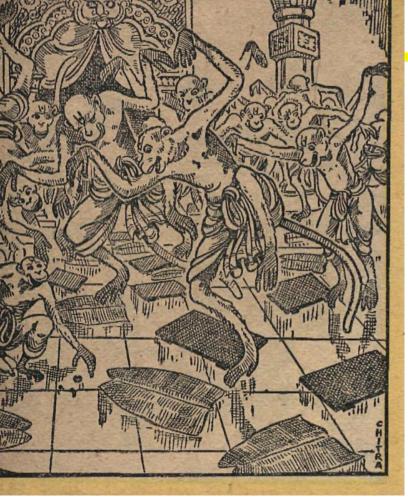
लोग अयोध्या आकर जो चीज़ चाहो खा सकोगे। इसलिए अब देरी न करो। आओ! सभी विमान पर चढ़ जाओ।" उनके इतना कहते ही तुरन्त सभी वानर पूँछ उठाए दौड़े और विमान पर चढ़ गए। हवा को सर-सर काटते हुए पुष्पक विमान पल भर में अयोध्या जा उतरा। अयोध्या जाकर सबसे पहले भगवान ने वानरों को राज-भोज देने का इन्तज़ाम किया। इसका सारा बोझ हनुमान के कन्धे पर पड़ा। एक घण्टे में सब चीजें जुटा ली गई। और एक घण्टे में छप्पन व्यञ्जनों के साथ वानरों के लिए राज-भोज तैयार हुआ। हनुमान ने आकर कहा-"सब लोग कतारों में बैठ जाओ। अभी खाना परोसा जाएगा।"

हनुमान की बात सुन कर सब वानर शान्त होकर कतारों में बैठ गए। हाँ, तो बन्दरों को बेर बहुत पसन्द है न ? यह जान कर सब के पत्तलों में बेर भी परोसे गए थे। एक वानर ने जो कतार के बीच बैठा हुआ था एक बेर उठाया और दोनों उँगलियों के बीच पकड़ कर दबाया। तुरन्त उसकी गुठली बाहर फिसल आई और ऊपर की ओर उड़ी। यह देख कर उस वानर ने कहा-"तू चींटी जितनी चीज़ ! क्या तू मुझसे भी ऊँचा उठना चाहती है ?" यह कह कर वह गुठली के साथ साथ ऊपर उछला। "भैया न जाने क्यों उछल रहा है ? मुझे भी इसके साथ उछल कर इसकी मदद करनी चाहिए।" यह सोच कर बगल का वानर भी ऊपर उछला। उन दोनों के पीछे तीसरा और उसके पीछे चौथा, इस तरह कतार के सब वानर ऊपर उछलने लगे।

परोसी हुई चीजें जहाँ की तहाँ बिखर गईं। वानर सभी एक जगह जमा होकर उछलने- कूदने लगे। यह देख कर हनुमान ने कहा-"भाइयो! यह कैसी ऊधम है ? क्या इतने में तुम लोग कहा-सुना सब भूल गए ? इसीलिए तो लोग हमें बन्दर कहते हैं ! खाने के लिए बैठने के बाद तुम लोगों ने इस तरह ऊधम मचाना शुरू किया। अगर अभी भगवान रामचन्द्र आ जाएँ तो वे मन में क्या सोचेंगे ? वे यह सब कैसे बर्दाश्त करेंगे ?" यों हनुमान उन्हें फटकारने लगा। इतने में में लड्डू की टोकरियाँ हाथ में लिए सीताराम खुद परोसने आए। उन्हें देख कर वानर सभी जहाँ के तहाँ चुपचाप बैठ गए। "हनुमान ! अपने वानरों पर क्यों नाहक बिगड़ते हो ! देखो तो ? वे कितनी शान्ति से बैठे हैं ?" तब हनुमान ने सोचा-"हाँ, अब ये ऊधम नहीं मचाएँगे।" भगवान लड्डू परोसने लगे। इतने में एक वानर को न जाने क्या सूझा कि वह उनके कन्धे पर चढ़ बैठा। दूसरे ने उनके हाथों से लड्डुओं की डालियाँ छीन ली। और एक वानर देवी सीता के गले का हार पकड़ कर कौतुक से देखने लगा, जैसे वह जौहरी हो। लेकिन इससे भी सीताराम को क्रोध न आया।
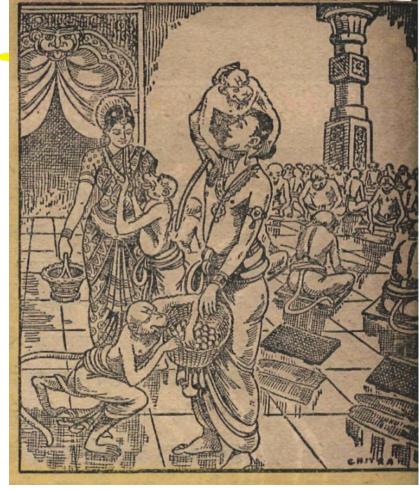
वानरों को इस तरह खेलते देख कर उलटे उन्हें खुशी हुई। पर हनुमान और लक्ष्मण वानरों की ओर घूर घूर कर देखने लगे। क्योंकि सीताराम को इस तरह अड़चन में देख उन्हें बहुत गुस्सा आ रहा था। कहाँ भगवान रामचन्द्र और कहाँ ये बन्दर ! कुछ छोटे-बड़े का ख्याल तो रखना चाहिए !

"हनुमान ! लक्ष्मण ! जब बाल-बच्चे शरारत करते हैं तो क्या उनसे माता-पिता नाराज होते हैं ? ये वानर तो हमारे बच्चों के समान हैं ! इन पर गुस्सा नहीं होना चाहिए।" हनुमान और लक्ष्मण की त्यौरियाँ चढ़ते देख कर भगवान ने उनसे कहा। वे मुसकुरा रहे थे। भोज खतम हो गया। तब भगवान ने हर एक वानर की पीठ अपने कर-कमल से सहला दी। तुरन्त वानर सभी जो लड़ाई के कारण थके हुए थे, तरो-ताजा हो गए। फिर भगवान के राज्याभिषेक की तैयारियाँ धूम-धाम से होने लगीं। उस अवसर पर भगवान ने खास तौर पर अपनी वानर सेना की प्रशंसा की। उन्होंने भरे दरबार में कहा-"हे वीरो ! पृथ्वी पर राम की कहानी के साथ साथ वानर वीरों का नाम भी अमर हो जाएगा। वानर को देखते ही हरेक मनुष्य को रामायण की कहानी याद आ जाएगी। इन दोनों में इतना गहरा नाता हो जाएगा कि तुम को खुश करने में ही मेरी खुशी जान कर मनुष्य तुम्हारी पूजा करके समझेंगे कि वे मेरी पूजा ही कर रहे हैं। आज से तुम इस देश के सभी तीर्थों में जाकर अपना घर बसा लो। वहाँ जो पुण्यात्मा लोग आएँगे, वे तुम्हें देख कर धन्य हो जाएँगे। मैं तुम्हारी सहायता का यही बदला चुका सकता हूँ।" यह कह कर भगवान ने प्रेम से उन्हें आशीर्वाद दे दिया। भगवान जब इस तरह कह रहे थे तो आसमान में देवता दुन्दुभी बजाने लग गए। वानरों पर फूलों की वर्षा हुई। उन्होंने पूँछें हिलाते हुए सीताराम और हनुमान के चरण छुए और विदा लेकर ऊधम मचाते हुए, देश के सभी तीर्थों में फैल गए। इसलिए इस देश के जितने भी तीर्थ हैं सब में वानर पाए जाते हैं।
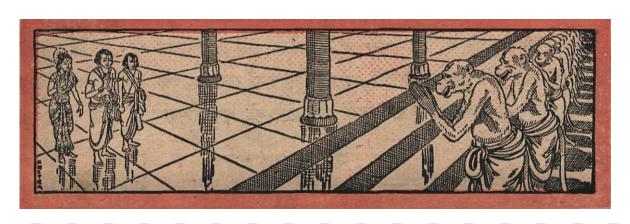
एक

किसी समय एक अफसर रिश्वत खाकर खूब रुपया कमाने लगा। इस तरह ज्यों ही उसकी आमदनी बढ़ गई, त्यों ही उसने अपने रसोइए को बुला कर कहा-"महाराज ! कल से हमारे लिए छ: तरह के व्यञ्जन तैयार करो !" उसी तरह महाराज रोज छः तरह के व्यञ्जन बनाने लगा। लेकिन कुछ दिन बाद चारों तरफ उसके रिश्वत खाने की बात फैल गई। तब वह अफसर नौकरी से निकाल दिया गया। नौकरी छूटते ही अफसर ने अपने रसोइए को बुला कर कहा- "मेरी नौकरी छूट गई। इसलिए कल से छः व्यञ्जन न बनाना। एक महीना बीत गया। रसोइए ने अफसर से आकर कहा कि घर में सामान खतम हो गया है। तब अफसर को कुछ शक हुआ। उसने रसोइए को साथ लेकर रसोईघर में जाकर देखा। वहाँ छः तरह के व्यञ्जन बना कर रखे हुए थे। "महाराज ! क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि एकाध व्यञ्जन बनाने से काम चल जाएगा ?" अफसर ने गुस्से में आकर पूछा। "जी हाँ ! इसीलिए तो आपको एकाध व्यञ्जन ही परोसता हूँ।" महाराज ने जवाब दिया। "तो फिर ये सब क्यों बनाए ?" अफसर ने अचरज साथ पूछा। "जी! मैं रोज छः व्यञ्जन ही बनाता आ रहा हूँ। उनमें आपको एकाध ही परोसता हूँ।" महाराज ने कहा। "ऐसा क्यों करते हो ?" अफसर ने पूछा।

"जी !आपकी नौकरी छूट गई। इसलिए आप एकाध व्यञ्जन से ही काम चला लेते हैं। लेकिन मेरी नौकरी तो नहीं छूटी है ?" रसोइए ने कहा। "अच्छा ! तो जाओ ! तुम्हारी नौकरी अभी छूट गई।" यह कह कर अफसर ने रसोइए को निकाल दिया।

सुधीर

दो

एक बार एक साधू रेलगाड़ी में सफर कर रहा था। एक स्टेशन पर टिकट-बाबू टिकट जाँचने आया। "मेरे पास टिकट नहीं है।" साधू ने बिना हिले-डुले जवाब दिया। "यह कैसी बात है साधू जी ! तुम गेरुआ पहने हो। दाढ़ी बढ़ा कर बड़े साधू बने हो ! क्या धोखा देना ही मुक्ति का मार्ग है ?" टिकट-बाबू ने पूछा। "जी ! हमने किसको धोखा दिया ? हम जानते हैं कि सत्य ही भगवान है। इसलिए सत्य के लिए ही हमने जीवन अर्पण कर दिया है। साधू को पैसे से क्या काम ? गृहस्थों को साधुओं का पोषण करना चाहिए। इसीलिए रेल बालों को भी बिना टिकट हमें सफर करने देना चाहिए।" साधू ने जवाब दिया ! "रेल वालों का यह कायदा है कि बिना टिकट सफर करने वालों को नीचे उतार दिया जाता है।" टिकट बाबू ने कहा। "क्या संसार में सब एक ही तरह के लोग होते हैं ?" साधू ने कहा। "इतना ही नहीं; बिना टिकट सफर करने वालों को जेल की हवा भी खानी पड़ती है।" टिकट बाबू ने कहा। "तो क्या हुआ ? जेल में हमें सरकार खाना देगी, कपड़ा देगी। जैसे यहाँ वैसे जेल में। इससे बढ़ कर हमें क्या चाहिए ?" साधू ने पूछा। "जेल में आपका भजन कैसे चलेगा ? वहाँ आपको भगवान कैसे मिलेंगे ?" टिकट बाबू ने उसकी हँसी उड़ाई। "भाई ! तुम नासमझ मालूम होते हो। क्या जेल में भगवान नहीं है ? भगवान सब जगह है। इसलिए जेल हो या रेल हो, हमारे लिए सब बराबर है।" साधू ने मुसकुरा कर जवाब दिया। टिकट बाबू उसकी बात का जवाब न दे सका। यों ही सर खुजलाता चला गया।

यह आज या कल की बात नहीं। कई सौ बरस पहले की बात है। एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह खूब बढ़ा-लिखा था। सब शास्त्रों में पारङ्गत था। उसके न बाल- बच्चे थे, पत्नी थी। फिर भी वह इतना गरीब था कि पेट मरना ही उसके लिए कठिन हो जाता था। पाण्डित्य में यह किसी से कम न था। आस-पास के सब पण्डितों को वह शास्त्रार्थ में आसानी से हरा सकता था। लेकिन न जाने, वह कैसा बदनसीब था कि उसे बहुत कोशिश करने पर भी कहीं नौकरी न मिली। उन दिनों आज की तरह लिखने के लिए कागज़-कलम नहीं थे। ताड़ के पत्तो पर लोहे के काँटे से लोग लिखते थे। इस ब्राह्मण को कुछ काम-धाम तो था नहीं। बेकार बैठे समय काटना कठिन हो जाता है न ? तिस पर एक या दो दिन नहीं; महीनों, सालों। इसलिए यह ब्राह्मण, ताड़ के पत्तों के गट्ठर लेकर अपनी देहली पर बैठता और कुछ न कुछ लिखता रहता। मन में जो आता, वही लिख डालता। जो दृश्य नजर में आता, जो आवाज उसके कानों में पड़ती, वे सभी लिख डालता। बाहर कुत्ता भोंकता तो उसके बारे में लिखता। खेत में सियार हुँआ ! हुँआ ! करता तो उसके बारे में लिख डालता। यही क्यों, हवा चलने पर जब पेंडों पर पत्ते हिलने लगते तो वह उसके बारे में भी लिख डालता। इस तरह वह दिन की ही नहीं, रात में भी लिखता ही रहता। वह क्या

रामसुख पण्डे
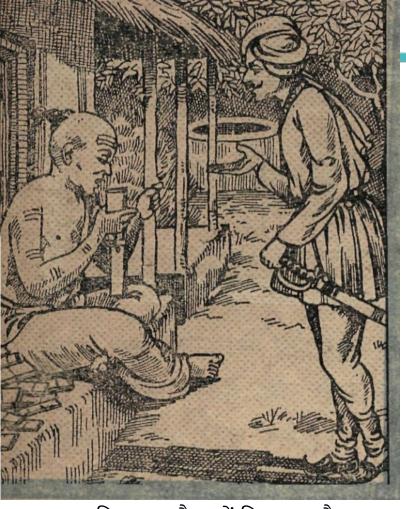
लिख रहा है, क्यों लिख रहा है, यह उस को भी ठीक-ठीक मालूम नहीं था। पर वह हजार आँखों और हजार कान वाले आदमी की तरह हर एक बात लिखता रहता। इस तरह लिखते लिखते ताड़ के पत्तों के गठ्ठर के गठ्ठर पूरे होने लगे। सारा घर उन्हीं गठ्ठरों से भर गया। लेकिन ब्राह्मण ने लिखना बन्द नहीं किया। हाँ, तो एक बार ऐसा हुआ कि उस नगर के राजा के महल में चोर घुस आए और बहुत से हीरे-जवाहरात चुरा ले गए। राजा के सिपाहियों ने उनका पीछा किया। लेकिन चोर पकड़े न जा सके। राजा के सब नौकर-चाकर सोच करने लगे।

आखिर उन में से एक को एक बात सूझी। उसने कहा-"हमारे शहर में एक वह पागल ब्राह्मण है न, जो दिन-रात बैठ कर देखी-सुनी हरेक बात लिखता रहता है ? चलो, उससे पूछ कर देखें। शायद उसने कुछ देखा-सुना हो !" तुरन्त राजा के सिपाही उस ब्राह्मण के पास दौड़े और पूछ-ताछ करने लगे। ब्राह्मण ने अपना पोथा खोला और उस दिन की बातें पढ़ने लगा। बहुत देर तक पढ़ते-पढ़ते उसे एक जगह मिला- "दो पहर रात गए हमारे घर के पिछवाड़े के कुँए में धमाके की आवाज हुई।" सिपाही समझ गए कि भागते भागते चोरों ने हीरे-जवाहरों की

पेटी उसी कुँए में डाल दी होगी। यह सोच कर उन्होंने कुँए में ढूँढ़ना शुरू किया। सब चीजें कुँए में मिल गईं। एक भी चीज़ खोई नहीं थी। सिपाहियों ने जाकर राजा को सारा हाल सुना दिया। ब्राह्मण की बात सुन कर राजा को बहुत अचरज हुआ। उसने मन्त्री को बुला कर कहा-"ऐसे व्यक्तियों से राज्य का गौरव बढ़ता है। इसलिए इस ब्राह्मण को आज से राज की तरफ से नौकरी दे दो। इसे राज-महल के सिंहद्वार पर रखो और राजा के नौकर के लायक अच्छी पोशाक भी बनवा दो।" राजा का हुकुम सुनते ही मन्त्री ने ब्राह्मण को इसकी सूचना दी। उसकी खुशी का क्या कहना ! उस दिन से ब्राह्मण अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ी छोड़ कर राज-महल में रहने लगा। उसकी सेवा टहलके
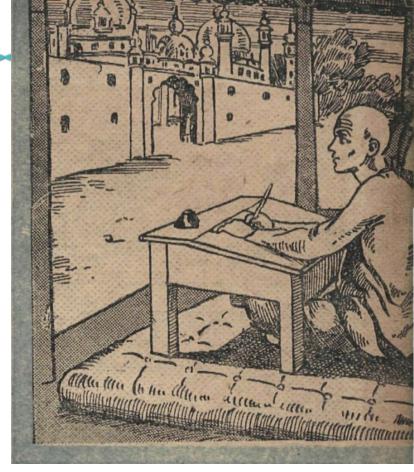
लिए नौकर-चाकर भी रखे गए। उसे कुछ गाँवों की जागीरी भी मिल गई और उसके बाल-बच्चों को भी उस पर हक दिया गया। उस दिन से उस ब्राह्मण को लोग सभी "धमाके पण्डित" कह कर पुकारने लगे।

"लोग चाहें जो कहें ! इससे मेरा क्या बिगड़ता है ? मैं तो अब आराम से हूँ।" उस ब्राह्मण ने सोचा। ब्राह्मण व्याह कर के सुख से जीवन बिताने लगा।

हम जिस संसार में रहते हैं उसको और देवता आदि जिन लोकों में रहते हैं उनको भी ब्रह्मा ने ही बनाया। सृष्टि करने में ब्रह्मा ने अपनी अपूर्व चतुरता दिखाई। इसलिए सब लोगों ने उसकी प्रशंसा की। लेकिन ऊर्णनाभ ने कुछ नहीं कहा। ऊर्णनाभ विश्वकर्मा का बेटा था। यह विश्वकर्मा कौन था ? विश्वकर्मा देवताओं का शिल्पी था। उसी ने देवताओं के महल, किले, और नगर बनाए थे। उसी ने देवताओं के बाग-बगीचे, सरोवर आदि बना कर उनको आनन्दित किया था। उसका लड़का ऊर्णनाभ बाप से बढ़-चढ़ गया था। संसार में कोई ऐसी चीज न थी जिसे वह एक बार देख लेने पर तैयार न कर सकता हो। जब सब लोग ब्रह्मा की प्रशंसा करने लगे तो ऊर्णनाभ ने कहा-"ब्रह्मा की कौन बड़ाई है इसमें ? ऐसी ऐसी चीजें तो मैं भी तैयार कर सकता हूँ।" यह कह कर वह भी ब्रह्मा की सृष्टि की सब चीजें बनाने लगा।

जब ब्रह्मा को पता चला कि ऊर्णनाभ उससे होड़ करने चला है, तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने उसे बुला कर कहा-"क्यों जी ! तुम को अपनी बुद्धि पर इतना गर्व हो गया कि मुझसे ही टक्कर लेने लगे हो ? चाहे तुम कितनी कोशिश करो, क्या मेरी तरह सृष्टि कर सकते हो ? तुम्हारी सृष्टि तो तुम्हारे नाम के ही अनुरूप होगी। 'ऊर्णनाभ' का अर्थ होता है 'मकड़ी'। तुम्हारी सृष्टि भी मकड़ी के जाले जैसी होगी जो एक बार फूँक देने से उड़ जाता है। इसलिए मुझसे होड़ लगाने का विचार छोड़ दो और देखो- फिर कभी ऐसी कोशिश न करना!" लेकिन ऊर्णनाभ ब्रह्मा की फटकार सुनकर

चुप न रहा। उसने कहा-"बूढ़े बाबा ! मुझे डराने-धमकाने का ख्याल छोड़ दो ! तुम कौन होते हो मुझे फटकारने वाले ?" देवता कितने ही शान्त चित्त वाले क्यों न हों, कभी कभी उन्हें भी क्रोध आ ही जाता है। ऊर्णनाभ की बातें सुन कर ब्रह्मा को भी इसी तरह क्रोध आ गया। "ऊर्णनाभ ! तूने मेरा अपमान किया। इसलिए जा ! तू पृथ्वी पर एक ऊर्णनाभ (मकड़ी) बन कर पैदा होगा और पेड़ों पर जाले बुन कर अपनी जिन्दगी बिताएगा।" ब्रह्मा ने उसे शाप दे दिया। और क्या था ? शाप सुनते ही ऊर्णनाभ थर-थर काँपते हुए ब्रह्मा के पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर माफी माँगने लगा-"देव ! मुझे क्षमा कीजिए ! मुझे इस मकड़ी के जन्म से बचाइए।" तब ब्रह्मा को उस पर करुणा आई। उसने कहा-"मेरा शाप तो अन्यथा नहीं हो सकता। तुझे मकड़ी बन कर पैदा होना ही होगा। हाँ, मैं तुझे उसी जन्म में मोक्ष पाने का एक उपाय बता सकता हूँ। सुनो ! तुम एक बिल्व-वृक्ष पर पैदा होने जा रहे हो। उसी जङ्गल में एक
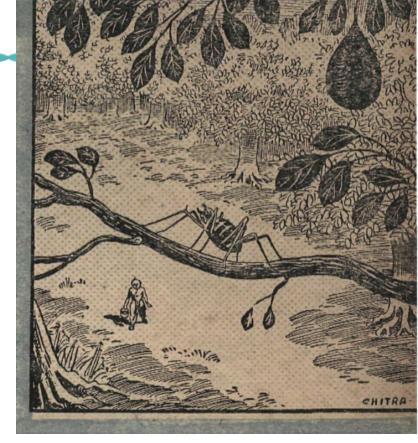
शिवलिङ्ग है। उसकी पूजा के लिए एक भक्त रोज बेल के पते तोड़ने तुम्हारे पास आएगा। उन पत्तों के साथ तुम भी शिव के निकट पहुँच कर मोक्ष पाओ !"

ब्रह्मा के शाप के अनुसार ऊर्णनाभ उस जङ्गल में बिल्व-वृक्ष पर मकड़ी बन कर पैदा हुआ। इस जन्म में भी मकड़ी को अपने पूर्व जन्म का सारा हाल याद था। इसलिए वह मकड़ी बड़ी उतावली से राह देखने लगी कि कब वह शिव-भक्त आए और कब शिवलिङ्ग के पास उसे पहुँचा दे। कुछ दिन बाद ब्रह्मा के वचनानुसार शिव-भक्त उस पेड़ के नजदीक आकर पत्तियाँ तोड़ने
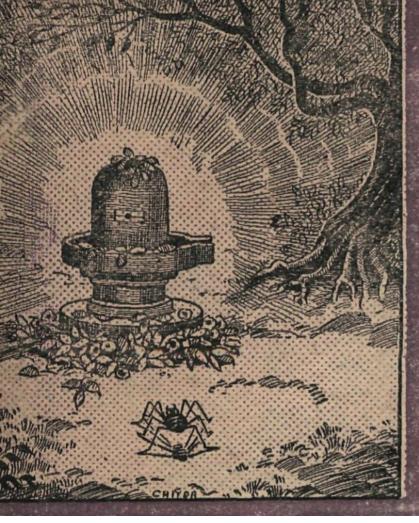
लगा। जिस डाल की पत्तियाँ वह तोड़ रहा था, मकड़ी उस पर गई और पतियों में छिप कर भक्त की टोकरी में चली गई। वह भक्त उन पत्तियों को ले जाकर उसी जङ्गल में एक शिवलिङ्ग की पूजा करने लगा। वह एक एक पत्ती उठा कर लिङ्ग पर डालने लगा। आखिर जिन पत्तियों में मकड़ी छिपी हुई थी वे भी भगवान पर चढ़ीं। इस तरह उस मकड़ी को शिवजी के दर्शन हुए। उस भक्त के चले जाने के बाद मकड़ी पत्तियों से बाहर निकल आई और आँखें भर कर शिवजी को देखने लगी। "मैं महादेव की नियम-पूर्वक पूजा करके मोक्ष पाऊँगी।" उसने मन में निश्चय कर लिया। लेकिन तुरन्त ही वह मकड़ी एक सोच में पड़ गई। उसने सोचा-"मैं केवल एक मकड़ी हूँ ! फिर भगवान की पूजा के लिए दल-फूल चाहिए। मैं ये सब कहाँ से लाऊँगी ? न ला सकूँगी तो फिर भगवान की पूजा कैसे करूँगी ?"

इस तरह सोचते सोचते उसके मन में एक विचार उठा। "भगवान की पूजा करने के लिए दल-फूल ही अनिवार्य नहीं हैं। इसके अन्य उपाय भी हो सकते हैं। क्या मैं सुन्दर जाला नहीं बुन सकती ? इस भगवान के लिए किसी ने मन्दिर वगैरह बनाया भी नहीं है। मैं अपनी सारी शक्ति लगा कर इस भगवान के लिए एक सुन्दर मन्दिर बनाऊँगी।" उसने मन में कहा और तुरन्त काम शुरू कर दिया। शाम होते तक उसने भगवान के लिए एक सुन्दर मन्दिर, मण्डप वगैरह बना दिए। जानते हो, उसने कैसे बनाया ? ईंट- गारे से नहीं ! मकड़ी ईंट-गारा कहाँ से लाती ? लेकिन उसकी नाभि में एक तरह की गोन्द रहती है। इस गोन्द से मकड़ी सुन्दर, सुनहरे रेशे निकाल कर उनसे जाले

चुनती है। इस मकड़ी ने भी उन्हीं रेशों से महादेव के लिए मण्डप, मन्दिर वगैरह बनाए। वे इतने सुन्दर थे कि कुछ कहा नहीं जा सकता। देवता लोग भी वैसी बुनाई नहीं कर सकते। दूसरे दिन जब सबेरा हुआ तो ओस की बूदें उन जालों पर पडीं और सूरज की रोशनी में उन्हें देखने से ऐसा मालूम होने लगा जैसे किसी ने बहुमूल्य मोतियों की झालरें लटका दी हों। प्रभात की आभा में ओस की हरेक बूँद पर सैकड़ों इन्द्र-धनुष नाच उठे। लेकिन एक कठिनाई जरूर थी।

मकड़ी के जाले से बुने हुए मन्दिर और मण्डप देखने में सुन्दर तो थे। लेकिन उनमें टिकाऊपन कहाँ था ? ज्यों ही जरा हवा चलने लगती त्यों ही उनके तार टूटने लगते। उनको फिर से जोड़ने में ही मकड़ी का सारा समय बीत जाता। फिर भी वह बडे सब्र से दिन रात उन्हें जोड़ती रहती। महादेव पर उसकी भक्ति का कोई ठिकाना न था। इस तरह कुछ दिन बीत गए तो महादेव के मन में उस मकड़ी की परीक्षा लेने का विचार उठा। एक दिन वह भक्त, जिसके कारण मकड़ी को भगवान के निकट आने का मौका मिला था, रोज की तरह पूजा करने आया और पूजा समाप्त होने के बाद भगवान के सामने दीप जला कर चला गया। उसके जाने के बाद भगवान ने अपने प्रभाव से दीपक की लौ को बढ़ा दिया। एक तिलक की तरह जलती हुई लौ एक में मशाल की तरह जलने लगी और देखते देखते मकड़ी के अत्यन्त मेहनत से बने हुए, जाले में आग लग गई। पल भर में भगवान के मन्दिर, मण्डप वगैरह सब जल गए। अब बेचारी मकड़ी क्या करती ? मकड़ी को दीपक पर बहुत क्रोध
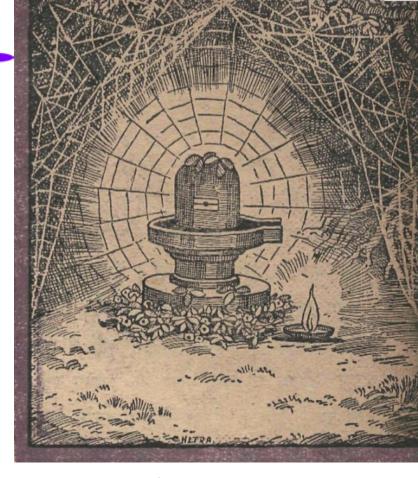
आया। उसने मन में कहा-"भगवान के लिए मैंने इतनी मेहनत करके जो मन्दिर-मण्डप बनाए वे तो जल गए। मेरी सारी मेहनत पर पानी फिर गया। अब मैं जीकर क्या करूँ ? भगवान के प्रति इस दीपक ने बड़ा भारी अपराध किया। इसलिए मैं मर कर भी इसे दण्ड दूँगी । जान गई तो गई; इस दीपक को बुझा कर मैं अपना बदला तो चुका दूँगी।" यह निश्चय करके मकड़ी दीपक को बुझाने के लिए दौड़ती हुई भगवान के निकट आई। यह देख कर भगवान भी चकित हो गए। "अहा ! इस मकड़ी की भक्ति का क्या कहना है ?" भगवान ने सोचा। झट वह प्रत्यक्ष हुए और मकड़ी से कहने लगे-"ठहरो ! टहरो ! उस दीपक को न बुझाओ। तुम्हारी भक्ति की परीक्षा लेने के लिए मैंने ही यह नाटक किया है। मैं तुम्हारी भक्ति से बहुत खुश हूँ। अब बोलो ! तुम क्या चाहती हो ?" भगवान को प्रत्यक्ष देख कर मकड़ी की खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन वह शिव का स्त्रोत्र करने के लिए श्लोक वगैरह तो जानती न थी। इसलिए भक्ति से पागल होकर वह बारम्बार भगवान को प्रणाम करने लगी। भगवान ने वर माँगने को कहा।

मकड़ी चाहती तो उस जन्म से छुटकारा पाकर और कोई जन्म माँग सकती थी। धन-दौलत या दीर्घायु माँग सकती थी। लेकिन मकड़ी ने ऐसी कोई चीज़ नहीं माँगी। "किसी भी जन्म में यातना से छुटकारा नहीं मिल सकता। इसलिए मैं जन्म नहीं चाहती। भगवन् ! तुम मुझे अपने में मिला लो !" उसने अपनी इच्छा प्रगट की। भगवान ने उसकी बुद्धिमानी की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने उसे अपने में लीन करके मोक्ष दिया। इस तरह कीटक जन्म में भी ऊर्णनाभ को मोक्ष मिल गया।

किसी समय मगध देश में एक राजा रहता था। वह अपनी प्रजा का सन्तान की तरह पालन करता था। इसलिए सब लोग उससे प्यार करते थे। लेकिन उसमें एक बड़ी भारी खराबी थी। वह यह थी कि कोई अगर उसका कहा काम झट नहीं करता या उसका मना किया हुआ काम करता तो उसे बहुत गुस्सा आ जाता। उस गुस्से में वह बहुत अनुचित काम भी कर बैठता था। लेकिन थोड़ी ही देर में उसका गुस्सा काफूर हो जाता और वह बहुत पछताता कि क्यों मैं इस तरह आपे से बाहर हो जाता हूँ। वह राजा कभी कभी अकेले बैठ कर इस तरह सोचने लगता-"मैं हर रोज किसी न किसी पर गुस्सा कर ही बैठता हूँ। यह कोई अच्छी बात नहीं है। अगर मुझे कोई ऐसी लड़की मिलती, जो मेरा कहा काम करती और मना किया हुआ काम न करती तो बड़ा अच्छा होता। मैं उससे ब्याह करके उसे अपनी रानी बना लेता।"

लेकिन उसे इस तरह की न कोई लड़की मिली और न उसने ब्याह ही किया। इस तरह कुछ दिन बीतने के बाद एक बार वह राजा जङ्गल में शिकार खेलने गया। शिकार खेलते-खेलते वह बहुत दूर चला गया और राह भूल कर भटकने लगा। प्यास के मारे उसका गला सूखने लगा। लेकिन कहीं पानी की एक बूँद भी न दिखाई दी। भटकते-भटकते दूर पर उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी। उसकी जान में जान आई। झोंपड़ी के पास घोड़े से उतरा और पुकारा-"कोई है इस झोंपड़ी में?" इतने में एक सोलह साल की

लड़की उस घर से बाहर आई।"मैं बहुत प्यासा हूँ। एक घूँट पानी मिलेगा ?" राजा ने कहा। "जरूर" कह कर वह लडकी अन्दर चली गई। थोड़ी देर में वह एक लोटे में दूध, एक कटोरी में कुछ फल और एक गिलास में पानी लेकर बाहर आई। राजा ने कुछ फल खाकर दूध पिया और अपनी प्यास बुझाई। तब राजा को चैन हुआ। वह लड़की की ओर देखने लगा। गरीबी के कारण उस लड़की के बदन पर गहने वगैरह कुछ थे नहीं। लेकिन इससे उस लड़की की शोभा और भी बढ़ गई थी। उसकी आँखों से भोलापन टपक रहा था। राजा ने उस लड़की की ओर देखते हुए उसे अपने हाथ का खाली लोटा दिखाया और कहा-"मैं इस देश का राजा हूँ। अगर तुम इस लोटे से सातों सागरों का जल निकाल लोगी तो मैं तुमसे ब्याह करके अपनी रानी बनाऊँगा।"

राजा की बात सुनते ही उस लडकी ने नीचे झुक कर मुठ्ठी भर मिट्टी उठा ली और राजा को दिखा कर कहा-"अगर तुम इस मिट्टी से संसार की सब नदियों में बाँध बाँध दोगे तो जरूर मैं इस लोटे से सातों सागर का पानी खींच लूँगी।" यह जवाब सुन कर राजा दङ्ग रह गया। उसे बहुत आनन्द भी हुआ। "वाह ! मैं इतने दिनों से तुम्हारी ही जैसी लड़की की खोज कर रहा था।" यह कह कर उसने उस लड़की को अपनी रानी बना लेने का निश्चय कर लिया। उसने उस लड़की के पिता को अपना निश्चय जता दिया। 'हम गरीबों को इस से बढ़ कर और क्या

चाहिए !" लड़की के पिता ने कहा। अब क्या था ? राजा उस लड़की को अपने घोड़े पर चढ़ा कर अपने महल में पहुँचा। एक शुभ मुहूर्त में दोनों का ब्याह हुआ। ब्याह के पहले ही उस लड़की ने राजा से एक वचन ले लिया था। "मैंने सुना है कि आप बड़े क्रोधी हैं। अगर यह सच है तो सम्भव है कि आप कभी न कभी मुझ पर क्रोध करके घर से निकाल दें। इसलिए मुझे वचन दीजिए कि जब आप मुझे घर से निकाल देंगे तो मुझे अपने साथ अपनी सबसे प्यारी एक चीज़ ले जाने की इजाजत दे देंगे। जब आप मुझे यह वचन देंगे, तभी मैं आपके साथ ब्याह करूँगी।" राजा ने उसकी बात मान ली। व्याह होने के कुछ दिन बाद राजा एक दिन भोजन कर रहे थे कि रानी किसी बात में उन्हें सलाह देने लगी। वह सलाह राजा को अच्छी नहीं लगी। "तुम्हारी राय कौन माँगने जाता है ? हर बात में तुम अपनी टाँग क्यों अड़ाती हो ? और तुम मुझे सलाह देने वाली होती कौन हो ?
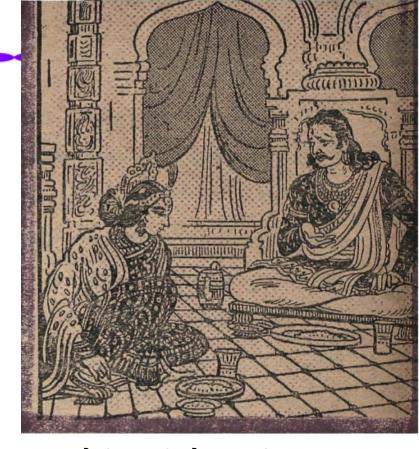
तुम जैसी जङ्गली औरतों के लिए मेरे महल में जगह नहीं है। जाओ ! कल मुँह-अँधेरे ही तुम मेरे महल में से चली जाओ !" राजा ने आग-बबूला होकर कहा।

रानी पहले से ही जानती थी कि ऐसा कभी न कभी होगा ही। इसलिए उसने अन्दर जाकर राजा के दूध में कुछ जड़ी-बूटी मिला दी। वह दूध पीकर राजा ऐसा मदहोश हो गया कि दीन-दुनिया की खबर ही भूल गया। रातों-रात अपने नौकरों की मदद से राजा को लेकर रानी अपनी

झोंपड़ी में पहुँच गई। सबेरा हुआ। राजा की नींद जब टूटी तो उसने अपने आपको एक झोंपड़ी में पाया। "मैं रात को अपने महल में सोपा था। फिर यहाँ कैसे पहुँच गया ?" वह अचरज करने लगा। "क्यों ? आप घबरा क्यों रहे हैं ?" रानी ने वहाँ आकर पूछा। "मुझे यहाँ कौन लाया ? कैसे लाया ? तुरन्त बताओ !" राजा ने आँखें तरेरते हुए कहा। "ठहरिए ! गुस्सा न कीजिए ! मैं ही आपको यहाँ ले आई हूँ। आप भूल गए क्या ? क्या आपने मुझे वचन नहीं दिया था कि घर से निकाल दिए जाने पर मुझे अपने साथ सबसे प्यारी एक चीज़ ले जाने का अधिकार होगा !" रानी ने पूछा। "हाँ, वचन तो दिया था।" राजा ने याद करके कहा। "तो और क्या ? क्या आपको मालूम नहीं कि मेरी सबसे प्यारी चीज़ आप ही हैं ? इसीलिए आपको अपने साथ ले आई हूँ !" रानी ने शान्त-भाव से कहा।

राजा के अचरज का ठिकाना न रहा। "वाह ! रानी ! तुमने यह कैसा काम किया ? क्या इसीलिए तुमने ब्याह करने के पहले ही मुझसे ऐसा वचन ले लिया था ? मुझे नाहक ही तुम पर गुस्सा आ गया। मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिया। यह सब भूल जाओ ! अब कभी ऐसा न करूँगा ! तुम्हारी जैसी रानी मुझे और कहाँ मिलेगी ?" यह कह कर राजा रानी को लेकर महल को लौट गया। उस दिन से राजा-रानी में फिर कभी झगड़ा न हुआ। दोनों ने बहुत दिन तक राज किया।

CHANDAMAMA (HINDI) DEEPAVALI NUMBER 1951 REGD. NO. M. 5452

रङ्ग भरो (कहानी) चित्र ४